ॐ

श्री शांतिनाथ विधान

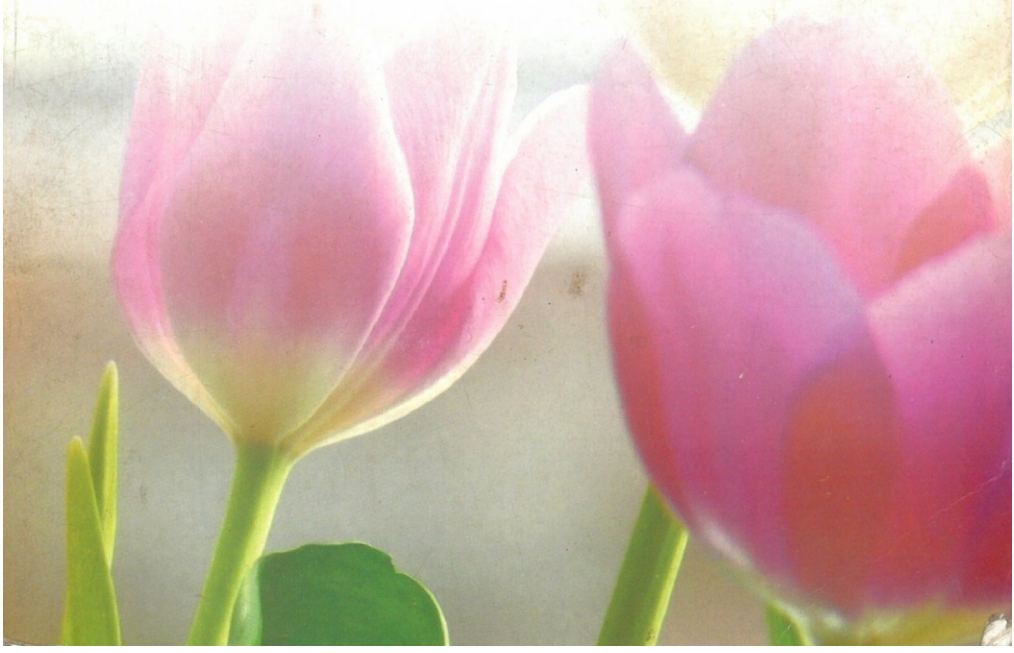

कुन्दकुन्द परम्परा के उन्नायक,
दिगम्बर जैन सरोवर के राजहँस, रत्नत्रय तीर्थ परम पूज्य

संतशिरोमणि आचार्य श्री 108

विद्यासागर जी महाराज

आर.के. मार्बल ग्रुप एवं वन्डर सीमेंट ग्रुप
मकराना रोड, मदनगंज-किशनगढ़, जिला - अजमेर (राज.)
lasting impressions
WONDER CEMENT
EK PERFECT SHURUAAT

ॐ

श्री शांतिनाथ विधान

श्री दिगम्बर जैन धर्म प्रभावना समिति
श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर उदासीन आश्रम
अशोक नगर उदयपुर-313 001 (राज.)

आशीर्वाद
अध्यात्म सरोवर के राजहंस
परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

रचयित्री
आर्यिकारत्न श्री 105 पूर्णमति माताजी

मंगल भावना

आत्मा के असंख्यात प्रदेशों को आनंदित करने वाला शांति प्रदायक, परम सुखकारी, आल्हादकारी नाम है - 'श्री शांतिनाथ भगवान'।

जिनका नाम मात्र का स्मरण ही समस्त वैभाविक अशांति का विलय कर आत्मिक शांति की शीतल अनुभूति देता है। ऐसे श्री शांतिनाथ भगवान के गुणों के बारे में वृहस्पति, यतिपति भी लिखने में असमर्थ हैं तो मैं अल्पमति कैसे लिख सकती हूँ? फिर भी भक्ति के वशीभूत हो इस छोटे से विधान के माध्यम से प्रभु के गुणों का मंगलाचरण मात्र करने का प्रयास किया है।

भक्ति की इस पुण्य सलिला में अवगाहित हो भव्यजन रत्नत्रय को प्राप्तकर, पंच परमपद का ध्यानकर, चार आराधना और द्वादश भावना का चिंतन कर, तीर्थंकर पद की प्राप्ति हेतु सोलह कारण भावना से युक्त हो तीर्थंकर पद को प्राप्त कर, अष्ट प्रातिहार्य से युक्त होता हुआ अंत में अष्ट कर्म का क्षयकर सिद्ध दशा से युक्त हो अष्ट गुण को प्राप्त कर लेता है।

सिद्धि आत्महितकारी है किन्तु सिद्धि से पूर्व प्राप्त चौंसठ ऋद्धि स्व-पर हितकारी है। तीर्थंकरों ने ऋद्धि सिद्धि दोनों को प्राप्त कर लिया है।

मैं भी अपनी श्रद्धा का बहुमूल्य अर्घ्य शांति प्रभु के श्री चरणों में गुरुदेव की कृपा से अर्पित करती हूँ और आचार्य श्री जी के आशीर्वाद की पवित्र छाया में भक्ति का यह छोटा सा दीप अंतिम श्वास तक जलता रहे यही प्रार्थना करती हूँ।

इस विधान को लिखने का भाव करवाने वाले व लिखवाने वाले गुरुदेव ही हैं। आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महाराज के भावों की विमल सलिला के किनारों तक प्रभु भक्तों को लाकर, मैं अलग हो रही हूँ। भक्त गण इसमें स्वयं अवगाहित हो एक नई दिशा और नई स्फूर्ति को प्राप्त करें।

शांतिदाता सभी वीतराग पद धारी, चौबीस तीर्थंकरादि को, मेरा केवलज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेद प्रमाण, प्रत्येक पल आत्म शांति हेतु अनंत नमन्।

हे प्रभो! आपश्री से क्या चाहूँ, आपसे आपसा ही पद चाहूँ और कुछ चाह नहीं, शुद्ध स्वभाव दशा प्रगट हो यही प्रार्थना है।

- आर्यिका श्री पूर्णमति माताजी

प्राक्कथन

वर्तमान परिवेश अशांति, स्वार्थ, लिप्सा एवं आतंकमय हो गया है। पाश्चात्य की आंधी ने धार्मिक भावनाओं को आहत कर नैतिकता को छिन्न-भिन्न कर दिया है। सुख-शांति की कामना से संग्रहित भौतिक संसाधन एवं भोगोपभोग अशांति की सौगात दे जाते हैं। हर सुविधा दुविधा का कारण बन रही है।

हुण्डावसर्पिणी पंचमकाल की विसंगति एवं मिथ्यात्व की प्रबलता में जहाँ विपरीत मान्यतायें एवं कामनायें कदम-कदम पर स्खिलित कर रही हैं, वहीं सम्यक्त्व किरण के रूप में मुनि विद्यासागर जी का संबल प्राप्त हुआ है। आज वह किरण आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के द्विशताधिक शिष्य समूह से प्रदीप्त ज्योति बनकर मिथ्यात्व तमस को हटा रही है। पंचम काल की विसंगतियां मानों पलायन कर गयी हैं।

काव्य परम्परा की धरोहर प्रत्येक शिष्य में संरक्षित है, कुछ शिष्यों ने उस धरोहर को अपनी संयम साधना एवं तपस्या के साथ बृद्धिंगतकर जनकल्याण की भावना से उद्घाटित किया है। जो भक्तों की सांसारिक व्यामोह से परे सम्यक् दृढ संकल्प पूर्वक की गयी भक्ति की शक्ति का वर्धन कर मुक्ति की युक्ति देती हैं।

आर्यिका श्री पूर्णमति माताजी ने इसी भावना से 'श्री शांतिनाथ विधान' का साहित्यिक अर्घ्य माँ जिनवाणी एवं गुरुदेव को समर्पित किया है। जिसके द्वारा साधक भौतिक कामनाओं की पूर्ति की भावना से परे, अर्हत् गुणों की प्राप्ति त्रियोग विशुद्धि से आराध्य की आराधना करके संवर एवं निर्जरा करके मोक्षपथ प्रशस्त कर सकता है।

मेरी यही मंगल भावना है माताश्री की लेखनी से निस्रित सत् साहित्य भव्य जीवों की निःकांक्ष भक्ति का संवर्धन कर उनका मोक्षमार्ग प्रशस्त करें।

शुभाकांक्षी

ब्र. जयकुमार निशांत प्रतिष्ठाचार्य

पुष्पभवन, टीकमगढ़ (म.प्र.)

अनुक्रमाणिका

1.	मंगलाष्टक स्तोत्रम्	1
2.	विधान की प्रारंभिक क्रियाएँ	3
3.	विनय पाठ	7
4.	नित्य पूजा पीठिका	9
5.	परमर्षि स्वस्ति मङ्गलपाठ	12
6.	देवशास्त्र गुरु समुच्चय पूजन	13
7.	नवदेवता पूजन	17
8.	श्री शांतिविधान स्तवन	21
9.	सिद्ध भक्ति	22
10.	मंगलाचरण	23
11.	विधान प्रारंभ	24
12.	आचार्य विद्यासागर जी महाराज की पूजन	52
13.	अर्घ्यावली	55
14.	महाअर्घ्य	57
15.	शांतिपाठ	58
16.	शांतिविधान की कथा	60

अध्यात्म सरोवर के राजहंस,
वात्सल्य के अजस्र स्रोत को बहाने वाले,
मेरे परम सौभाग्य,
परम उपकारी
आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज
के पावन कर कमलों में समर्पित...

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवराः, रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।1।।

श्रीमन्नम्र- सुरासुरेन्द्र- मुकुट-, प्रद्योत- रत्नप्रभा-,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन- सिद्ध- सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।2।।

सम्यग्दर्शन- बोध- वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति श्री- नगराधिनाथ- जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।3।।

नाभेयादिजिनाः प्रशस्त- वदनाः ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु- प्रतिविष्णु- लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि- पुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे)मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधि- ऋद्धयः श्रुततपो, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलाश्चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते (मे)मंगलम्।।5।।

ज्योतिर्व्यन्तर- भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बूशाल्मलि- चैत्यशाखिषु तथा वक्षार रूप्याद्रिषु।
इक्ष्वाकार- गिरौ च कुण्डल- नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-गृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।6।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य- सज्जिनपतेः, सम्मेद- शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त-शिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध विभवाः,कुर्वन्ते ते (मे) मंगलम्।।7।।

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।8।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर- प्रवेश- महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।9।।

इत्थं श्रीजिन- मंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य- सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै- र्धर्मार्थ- कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय- रहिता निर्वाण- लक्ष्मीरपि।।10।।

।।इति श्री मंगलाष्टक स्तोत्रम्।।

विद्यासागर-विश्व-वन्द्य-श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे,
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।।
ज्ञान-ध्यान-तपोभिरक्त मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशाल हृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरम्।।

विधान की प्रारंभिक क्रियाएं

अमृत स्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं इवीं इवीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें)

तिलक मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांग शुद्धि हेतवः नव तिलकं करोम्यहम् ।

1. शिखा, 2. मस्तक, 3.ग्रीवा, 4. हृदय 5. दोनों भुजायें, 6. पीठ, 7. कान, 8. नाभि, 9. हाथ।

दिग्बंधन मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशातःआगतविघ्नान् निवारय निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशातःआगतविघ्नान् निवारय निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशातःआगतविघ्नान् निवारय निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशातःआगतविघ्नान् निवारय निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः सर्वदिशातःआगतविघ्नान् निवारय निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मंत्र

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं नमः स्वाहा। (सात बार)

रक्षा मंत्र

ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमंत्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा।

(तीन बार पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करना)

शांति मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वविघ्न प्रणाशनाय सर्व-रोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्व-क्षामडामरविनाशनाय सर्वारिष्ट शांतिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शांतिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सात बार मंत्र को पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करना)

भूमि शुद्धि मंत्र

ॐ शोधयामि भूभागं जिनधार्माभिरूत्सवे।
काल धौतोज्ज्वल स्थूल कलशापूर्ण वारिणी।।

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्म तीर्थनाथाय श्रीशांतिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

पात्र शुद्धि

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा पवित्रतर-जलेन पात्र शुद्धिं करोमि।

(पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें)

द्रव्य शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थ पवित्र जलेन शुद्ध पात्र निक्षिप्त पूजा द्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्ध करें)

सकलीकरण

अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

अंग शुद्धि (दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

शरीर पर पुष्प क्षेपण करें

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

वस्त्र पर पुष्प क्षेपण करें

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पूजन द्रव्य पर पुष्प क्षेपण करें

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

स्थान निरीक्षण करें

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वजगत की रक्षा के लिए जल सिंचन करें

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

दहिने हाथ में रक्षा सूत्र बाँधें

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसन त्याग, अष्ट मूल गुण धारण, अभक्ष्यत्याग, रात्रि भोजन त्याग, नशीले पदार्थों का त्याग, ब्रह्मचर्य पालन, एकाशन, पानी सायं 7 बजे तक, ग्राम से बाहर जाने की छूट नहीं।

जल शुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमतेपद्म महापद्म-तिगिंछकेसरि पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता सीतोदा-नारी नरकान्ता सुवर्णरूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि जलं सुवर्ण घटं प्रक्षप्तिं-सर्वगन्धपुष्पाढ्य-ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पूंगादि फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्री फल रखने का मंत्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्मणि वीर निर्वाण संवत्सरे..... मासे, ... पक्षे .....तिथौ..... वासरे प्रशस्त लग्ने नवरत्न गंध पुष्पाक्षत बीजपूरादि शोभितं..... कार्यस्य निर्विघ्न सम्पन्नार्थ मंगल कलश स्थापनं करोमि श्रीं भ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मंडल के ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

मंगल दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरंशुभदीपकंसकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी,तुम ही हो सिरताज
मुक्ति-वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि- शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार।।3।।

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो धरता, निज गुण रास।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को,नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं वन्दों जिनदेव को, करि अति निरमल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव।।6।।

भविजन को भव-कूप तें, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भण्डार।।7।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में,भविजन को शिवगैल।।8।।

तुम पद-पङ्कज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।।9।।

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलें आपतें आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहें,नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अञ्जन से तारे कुधी,जय जय जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय-जय जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान।।18।।

तुमरी नेक सुदृष्टि तें, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।

जो मैं कह हूँ और सों, तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार।।20।।

वन्दों पाँचों परमगुरु सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मङ्गलकरन, पूरन परम प्रकाश।।21।।

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।22।।

मङ्गल मूरत परम पद, पञ्च धरो नित ध्यान।
हरो अमङ्गल विश्व का, मङ्गलमय भगवान।।23।।

मङ्गल जिनवर पद नमों, मङ्गल अर्हन्त देव।
मङ्गलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव।।24।।

मङ्गल आचारज मुनि, मङ्गल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मङ्गल करो, वन्दौं मन-वच-काय।।25।।

मङ्गल सरस्वती मात का, मङ्गल जिनवर धर्म।
मङ्गलमय मङ्गल करो, हरो असाता कर्म।।26।।

या विधि मङ्गल से सदा जग में मङ्गल होत।
मङ्गल 'नाथूराम' यह भव सागर दृढ़ पोत।।27।।

नित्य पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्च-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।

अपराजितमंत्रोऽयं, सर्व-विघ्नविनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मङ्गलं मतः।।3।।

एसो पंच-णमोयारो,सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मङ्गलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक- विनिर्मुक्तं, मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

पञ्चकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश्-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।1।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पञ्चकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश्-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश्-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनाष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश्-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र-दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं।
स्याद्वादनायक मनन्तचतुष्टयार्हम्।।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्।
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय।
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय।।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ्मयाय।
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुत वैभवाय।।2।।

स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव परभाव-विभासकाय।।

स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्यवल्गन्।
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।4।।

अर्हन् पुराणपुरुषोत्तमपावनानि।
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।।
अस्मिञ्ज्वलद्विमल -केवलबोधवह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मःस्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

परमर्षि स्वस्ति मङ्गल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधि-ज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेक-बीजं, संभिन्न-संश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण- विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक-बुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

जंघानलश्रेणि-फलाम्बु-तन्तु, प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

अणिम्नि दक्षाकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।

(इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानं परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

देव शास्त्र गुरु समुच्चय पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

देव जिनेन्द्र दिगम्बर गुरु को, जिनवाणी को वंदन है।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्धों का अभिनंदन है।।
जड़ रत्नों की रक्षा करते, काल अनंत गँवाया है।
तीन रत्न शाश्वत निधि पाने, दास शरण में आया है।।1।।

वीतरागता सार जगत में, जब से मैंने जाना है।
प्रभु पूजा से सिद्धालय को, पाना मैंने ठाना है।।
हृदयांगन में करूँ प्रतीक्षा, नाथ बुलाने आया हूँ।
ज्ञान वेदी पर आन विराजो, यही भाव ले आया हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह ! विद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिसमूह!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह ! विद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिसमूह!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह ! विद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिसमूह !
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

ज्ञान सिंधु लहराता मुझमें, फिर भी राग में जलता हूँ।
जलन सही ना जाती मुझसे, प्रभु आश पर पलता हूँ।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, राग आग का शमन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो
जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

चंदन सा शीतल स्वभाव पा, द्वेष अनल में झुलस गया।
किन्तु सौम्य जिन मूरत लख कर, सारे जग को भूल गया।।

देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, द्वेष दाह का शमन करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं ....।

अक्षय पुर का वासी होकर, खंडित सुख को चाह रहा।
नंत बार धिक्कार मुझे है, निज स्वभाव से दूर रहा।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अक्षय पद का वरण करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

कल्पतरु सम स्वभाव मेरा, ज्ञान पुष्प सुरभित होते।
काम भोग की आँधी में सब, फूल गिरे धूमिल होते।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, निज स्वरूप में रमण करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

समता रस का कूप भरा है, फिर भी तृष्णा प्यासी है।
स्वयं नाथ होकर इच्छा की, बनी चेतना दासी है।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अध्यातम रस पान करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

ज्ञान सूर्य चेतन प्राची में, अनंत किरणों वाला है।
फिर भी मिथ्यातम ने घेरा,छाया घोर अंधेरा है।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, मोह तिमिर का नाश करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ....।

चेतन गृह में चिन्मय धूप, निरंतर जलती रहती है।
फिर भी भाव कर्म की शक्ति, मुझको छलती रहती है।।

देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अष्ट कर्म विध्वंस करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

रत्नत्रय तरुवर पर सुंदर शिवफल प्राप्त किया स्वामी।
पुण्य फलों में राग भाव कर, भटक रहा मैं भवगामी।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, मोक्ष महापद प्राप्त करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ...।

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं स्वामी।
दर्शन ज्ञान चरित गुण आदि, निज में प्रगट करूँ स्वामी।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अनर्घ्य पद को प्राप्त करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(चौबोला छंद)

चार घातिया सर्व नाश कर अर्हत पद को पाया है।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, प्रभु को शीश नवाया है।।
छियालीस गुण कहने को है, अनंत गुण के धारी हैं।
नंत चतुष्टय युक्त जिनेश्वर, तीन लोक हितकारी हैं।।1।।

बिन इच्छा खिरती उपकारी, मेघ गर्जना समवाणी।
स्व पर भेद विज्ञान कराती, तीन जगत की कल्याणी।।
तालु ओष्ठ कंठादि न हिलते, नहीं बदलती मुख कांती।
द्वादशांग ओंकारमयी हैं, सर्व अंग से है खिरती।।2।।

वर्तमान के भरत क्षेत्र में, सिद्ध और अरहंत नहीं।
तीन परमपद धारी दिखते, सूरी पाठक और मुनी।।

सूरीश्वर पाठक साधू गण, रत्नत्रय के धारी हैं।
पथ भूलों को राह दिखाते, गुरुवर भव दुख हारी हैं।।3।।

मन वच तन से गुरु चरणों में, अपना शीश झुकाता हूँ।
जिनवर सी पावन मुद्रा लख, जीवन अर्पण करता हूँ।।
विदेह जाने की नहीं शक्ति, अतः यहीं से नमन करूँ।
सीमंधर से अजितवीर्य तक, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।।4।।

एक साथ इक शत सत्तर भी, तीर्थंकर हो सकते हैं।
किंतु न्यूनतम बीस तीर्थंकर, विदेह में ही होते हैं।।
ढाई द्वीप के पन विदेह में, विद्यमान जिन को वंदन।
समवसरण के मध्य विराजे, श्रद्धा से कर लूँ अर्चन।।5।।

शीघ्र दर्श प्रत्यक्ष मुझे हो, यही भावना भाता हूँ।
भावों से जब वंदन करता, समीप ही मैं पाता हूँ।।
मुक्ति का ही लक्ष्य बनाकर, सिद्ध प्रभु का ध्यान धरूँ।
अभेद रत्नत्रय को पाऊँ, सिद्धक्षेत्र में वास करूँ।।6।।

सम्यक् दर्शन देव, शास्त्र से ज्ञान, गुरु से चारित हो।
बीस तीर्थ दर्शन से शांति, सिद्ध दर्श से सिद्धि हो।।
देव शास्त्र गुरु पर श्रद्धा हो, बीस तीर्थंकर वंदन हो।
सिद्ध शुद्ध पावन परमेष्ठी अष्टकर्म मम खंडन हो।।7।।

-:: दोहा ::-

अनुपम जग में आप हो, इच्छित फल दातार।
शाश्वत शिव फल दीजिये, प्रभु पूजा आधार।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

प्रभुवर को पूजे, शिवपथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

नवदेवता पूजन

स्थापना

(गीता छंद)

अरि चार घाति विनाश कर, अरहंत पद को पा लिया।
पुरुषार्थ प्रबल किया प्रभो, मुक्तीरमा को वर लिया।।
अरहंत पथ पर चल रहे, आचार्य पद वंदन करूँ।
उवज्झाय साधु श्रेष्ठ पद का, भक्ति से अर्चन करूँ ।।1।।
जिन धर्म आगम चैत्य चैत्यालय शरण को पा लिया।
भव सिंधु पार उतारने, नौका सहारा ले लिया।।
यह भावना मेरी प्रभो, मम ज्ञान महल पधारिये।
निज सम बना लीजे मुझे, जिन राज पदवी दीजिये।।2।।

-:: दोहा ::-

सुख दाता नव देवता, तिष्ठो हृदय मँझार।
भावों से आह्वान करूँ, करो भवोदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयसमूह !
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयसमूह !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्य चैत्यालयसमूह!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - माता तू दया करके .....)

जिनको अपना माना, उनसे ही दुख पाया।
फिर भी क्यों राग किया, यह समझ नहीं आया।।
यह राग की आग मिटे, ऐसा जल दो स्वामी ।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो
जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

प्रभो ! काल अनादि से, भव का संताप सहा।
अब सहा नहीं जाता, यह मेटो द्वेष महा।।
इस द्वेष की ज्वाला को, अब शांत करो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।2।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं....।

जिसको मैंने चाहा, सब नश्वर है माया।
जिस तन में हूँ रहता, क्षणभंगुर वह काया।।
क्षत विक्षत जग सारा, अब जाऊँ कहाँ स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।3।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्....।

इस काम लुटेरे ने, आतम धन लूट लिया।
मैं मौन खड़ा निर्बल, बस तेरा शरण लिया।।
विश्वास मुझे तुम पर, आतम बल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।4।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

इस क्षुधा रोग से मैं, प्रभुवर लाचार रहा।
व्यंजन की औषध खा, ना कुछ उपचार हुआ।।
प्रभु तू ही सहारा है, यह रोग नशें स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।5।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

पर तत्त्व प्रशंसा में , महिमा पर की आयी।
नर तन में रहकर भी, निज की ना सुध आयी।।
अब ज्ञान ज्योति प्रगटे, आशीष मिले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।6।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं....।

कर्मों की आँधी में, चेतन गृह बिखर गया।
आया अब दर तेरे, निज आतम निखर गया।।
शुभ ध्यान अनल में ही, वसु कर्म जले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।7।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं....।

पापों का बीज बोया, कैसे शिव फल पाऊँ।
तप धारूँ कर्म नशें, तब सिद्धालय पाऊँ।।
मुझे पास बुला लेना, यह अरज सुनो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।8।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं....।

वसु कर्मों ने मिलकर, दिन रात जलाया है।
गुरुदेव कृपा पाकर, यह अर्घ्य बनाया है।।
यह पद अनर्घ्य अनमोल, हो प्राप्त मुझे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी।।9।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

-:: जाप्य ::-

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

-:: दोहा ::-

नव देवों की भक्ति से, सब अरिष्ट नश जाय।
आत्म सिद्धि को प्राप्त कर, अष्टम वसुधा पाय।।1।।

-:: चौपाई ::-

जय अरहंत देव जिनराई, तीन लोक में महिमा छाई।
घाति कर्म चउ नाश किये हैं, भव्य जनों में वास किये हैं ।।2।।

दोष अठारह दूर किये हैं, छयालीस गुण पूर्ण हुये हैं।
समवसरण के बीच विराजे, तीर्थंकर पद महिमा राजे ।।3।।

क्षणंभंगुर सारा जग जाना, जड़ चेतन को भिन्न पिछाना।
कल्याणक सब पंच मनाये, देव इंद्र हर्षित गुण गाये।।4।।

प्रभो! आपने प्रभुता पायी, दो हमको समता सुखदायी।
दुष्ट करम ने मुझको घेरा, निज स्वभाव से मुख को फेरा।।5।।

प्रभो! आप सिद्धालय वासी, दर-दर भटका मैं जगवासी।
अब निज भूल समझ में आई, सिद्धदशा ही मन में भायी।।6।।

करो नमन स्वीकार हमारा, भव सागर से करो किनारा।
कर्म भँवर में मेरी नैया, गुरुवर तुम बिन कौन खिवैया।।7।।

गुण छत्तीस मुनीश्वर धारे, इस कलयुग में आप सहारे।
दीक्षा देकर राह दिखाते, खुद चलते चलना सिखलाते।।8।।

उपाध्याय पद है तम नाशे, गुण पच्चीस ज्ञान परकासे।
अट्ठाईस गुणों के धारी, साधू पद की महिमा भारी।।9।।

श्री जिनधर्म अहिंसा प्यारा, गूँज उठा है जग में नारा।
आगम आतम बोध कराता, फिर चेतन का शोध कराता।।10।।

जिनने आगम को अपनाया, अहो भाग्य तुम सा पद पाया।
अनेकांत मय धर्म सहारा, द्वादशांग को नमन हमारा।।11।।

कर्मनिकाचित् निधत्ति विनाशे, बिम्ब जिनेश्वर आत्म प्रकाशे।
निज स्वरूप का बोध कराती, जिन सम जिन मूरत कहलाती।।12।।

जो जन नित जिन मंदिर जावे, पाप नशे औ पुण्य बढ़ावे।
परमातम का ध्यान लगावे, शुद्ध होय मुक्तीपुर जावे।।13।।

नव देवों को शीश झुकाऊँ, गुण गाऊँ और ध्यान लगाऊँ।
रहूँ सदा मैं प्रभुवर चरणा, भव-भव मिले आपकी शरणा।।14।।

-:: दोहा ::-

पूर्व पुण्य से हो रहा, नव देवों का दर्श।
अल्प बुद्धि कैसे लहे, अनंत गुण का स्पर्श ।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य- चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

प्रभुवर को पूजे, शिवपथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।।इत्याशीर्वादः।।

शान्तिनाथ-स्तवन

(आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा रचित)

प्रजा सुरक्षित कर रिपुओं से निजी राज्य अविभाज्य किया।
सुचिर काल तक प्रतापशाली अजेय राजा राज्य किया।।
स्वयं आप पुनि मुनि बन वन में पापों का अतिशमन किया।
शान्तिनाथ जिन! दया-धाम हो शान्ति-रमा से रमण किया।।1।।

पुण्य-पुरुष चक्री बन तुमने चक्र दिखा कर डरा दिये।
छहों खण्ड के नराधिपों को पूर्ण रूप से हरा दिये।।
समाधि मय निज दिव्य चक्र पुनि मोह शत्रु पे चला दिया।
दुर्नय-दुर्जय दुष्ट क्रूर को मिट्टी में बस मिला दिया ।। 2।।

राजाओं के राजा बन कर राजसभा में राजित थे।
लघु राजाओं के सुख-साधन तुम पर ही निर्धारित थे।।
किंतु पुनः जब निजाधीन हो आर्हत् पद को प्राप्त हुए।
अगणित अमरासुर पतिगण में हुए सुशोभित, आप्त हुए।। 3।।

नरेन्द्र जब थे, नरपति दल ने तव चरणों में शरण लिया।
सदय बने जब मुनिवर तुम को दया-धर्म ने नमन किया।।
पूज्य बने जिन तव पद युग में, सुरदल आ प्रणिपात हुआ।
ध्यानी बनते, कर्म विनसता, हाथ जोड़, नत-माथ हुआ ।। 4।।

निजी दोष सब पूर्ण मिटाकर प्रथम प्रशम बन शान्त हुए।
शान्ति दिलाते शरणागत को सुचिर काल से क्लान्त हुए।।
शान्तिनाथ जिन! शान्ति विधायक शान्त मुझे अब आप करो।
शरण चरण में मुझे दिलाकर भव-भव का मम ताप हरो।। 5।।

-:: दोहा ::-

सकलज्ञान से सकल को, जान रहे जगदीश।
विकल रहे जड़ देह से, विमल नमूँ-नत शीश ।। 1।।

कामदेव हो काम से, रखते कुछ ना काम।
काम रहे ना कामना, तभी बने सब काम ।। 2।।
बिना कहे कुछ आपने, प्रथम किया कर्त्तव्य।
त्रिभुवन पूजित आप्त हो, प्राप्त किया प्राप्तव्य ।। 3।।
शान्तिनाथ हो शान्त कर, सातासाता सान्त।
केवल-केवल ज्योतिमय, क्लान्ति मिटी सब ध्वांत।। 4।।

सिद्ध भक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार मणायारा लक्खण-मेयं तु सिद्धाणं॥ 1॥
मूलोत्तर-पयडीणं बंधोदय-सत्त-कम्मउम्मुक्का।
मंगल-भूदा सिद्धा अट्ठ-गुणातीद-संसारा॥ 2॥
अट्ठविय-कम्म-वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ-गुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥ 3॥
सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्धि-सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे॥ 4॥
गमणागमण-विमुक्के विहडिय-कम्म-पयडि-संघादा।
सासय-सुह-संपत्ते ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥ 5॥
जयमंगल-भूदाणं विमलाणं णाण-दंसणमयाणं।
तइलोय-सेहराणं णमो सया सव्व-सिद्धाणं॥ 6॥
सम्मत्त -णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-अव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥ 7॥
तव-सिद्धे णय-सिद्धे संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥ 8॥

इच्छामि भंते! सिद्ध-भत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुत्ताणं अट्ठविह-कम्मविप्प-मुक्काणं अट्ठ-गुण-संपण्णाणं उड्ढ-लोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाण-कालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणंसया णिच्चकालंअच्चेमि पूज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-मरणं जिणगुण-सम्पत्ती होउ मज्झं।

ॐ

श्री शांतिनाथ विधान प्रारम्भ

मंगलाचरण

-:: दोहा ::-

सोलहवें तीर्थेश को, नमन करूँ उर धार।
वसु कर्मों की शांति हित, प्रभु भक्ती आधार।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

शांति प्रदाता तीर्थेश्वर के, चरण कमल अतिशायी हैं।
नाम मात्र का सुमिरन ही सब, जीवों को सुखदायी हैं।।
भव-कान. में भटक रहे हैं, अज्ञानी जग के प्राणी।
प्रभु भक्ति ही राह दिखाती, भविक जनों की कल्याणी।।2।।

ग्रीष्म ऋतु में तप्त रवि सम, कर्म शत्रु से त्रासित हो।
क्रोध सर्प से डँसा हुआ यदि, जीव मोह विष व्यापित हो।।
ऐसे में भगवान आपकी, सद्भक्ति ही संबल है।
मंत्रौषधि बन पाप नाशकर, पहुँचाती शिव मंजिल है।।3।।

स्वर्ण मेरु या तप्त स्वर्ण की, कांति सम तनधारी हैं।
शांतिप्रभु का नाम मंत्र ही, भय संकट दुःखहारी है।।
काल महा विकराल गाल में, नंत जीव को डाल रहा।
मृत्युञ्जयी प्रभु नाम स्मरण से, काल स्वयं ही भाग रहा।।4।।

रत्न जड़ित त्रय छत्र सुशोभित, त्रय पदधर को वंदन है।
शांतिप्रभु के शुभ विधान से, मिट जाता सब क्रंदन है।।
दीप्तिमान भामण्डल लखकर, बाल भानु का शरमाना।
प्रातिहार्य वसु शोभित प्रभु की, अद्भुत महिमा क्या कहना।।5।।

सरवर में रवि किरण स्पर्श से, सरोज दल खिल जाते हैं।
जिन सूरज की भक्ति किरण से, भव्य कमल खिल जाते हैं।।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, जग को शांति प्रदाता हैं।
परमेष्ठी नवदेव ऋद्धिधर, आत्म शांति के दाता हैं।।6।।

वीतराग पदधर हैं जितने, शांतिनाथ गुण नाम धरें ।
नाम मंत्र मैं जपूँ भाव से, शांति जिनेश्वर कष्ट हरें।।
सर्व विघ्न बाधाएँ टलती, मनवांछित फल पाता है।
विनय भाव युत जो पढ़ता है, मोक्षलक्ष्मी को पाता है।।7।।

आत्मशांति की प्यास मुझे है, शांतिनाथ शरणा पाऊँ।
दृष्टिदोष मिथ्यात्व नाश हो, सम्यक् रत्नत्रय पाऊँ।।
प्रभु अभी तक मोह वशी हो, सांसारिक सुख चाह रहा।
इसीलिए मैं रागी-द्वेषी, संसारी ही बना रहा।।8।।

आज प्रबल पुण्योदय आया, शांतिप्रभु का शरण लिया।
जिन भक्ति से भगवन् बनने, चरण कमल में नमन किया।।
बहुत सुनी अब तक प्रभु महिमा, अब अनुभूति करना है।
लक्ष्य यही सानंद भाव से, मुक्तिरमा को वरना है।।9।।

श्री शांतिनाथ पूजन

स्थापना

(शंभु छंद)

हे शांति विधाता शांतिनाथ, मैं शरण तिहारी आया हूँ।
भव-भव में दुःख सहा भारी, अब शांति पाने आया हूँ।।
तव शांत मूर्ति लखकर मैंने, निज सिद्ध रूप पहचाना है।
शुभ भाव भक्ति से पूजन कर, शाश्वत सिद्धालय पाना है ।।1।।
कर्म भँवर में नाव मेरी, भवसागर पार लगा देना।
हे करुणासागर नाथ आप, मुझ पर भी करुणा कर देना।।
हे तीन पदों के धारी प्रभु, मम ज्ञान वेदी पर आ जाना।
यह भक्त पुकारे श्रद्धा से, प्रभु मेरे हृदय समा जाना।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसिद्धिसम्पन्न ! सर्वविघ्नविनाशक !आत्मशांतिप्रदायक ! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त ! षोडशतीर्थंकर ! श्रीशांतिनाथभगवन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसिद्धिसम्पन्न ! सर्वविघ्नविनाशक !आत्मशांतिप्रदायक ! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त ! षोडशतीर्थंकर ! श्रीशांतिनाथभगवन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसिद्धिसम्पन्न! सर्वविघ्नविनाशक!आत्मशांतिप्रदायक! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशतीर्थंकर! श्रीशांतिनाथभगवन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - माता तू दया करके...)

संसार सिंधु गहरा, कोई न सहारा है।
जन्मादि भँवर उठते, दिखता न किनारा है।।
रत्नत्रय जल पाने, आया मैं भवगामी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन सी शीतलता, तव पद में पाई है।
वैभाविक दाह मिटे, यह आस जगाई है।।
भव ज्वाला बुझ जाए, चाहूँ मैं जगनामी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।।2।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय भवातापविनाशनाय चंदनं...।

जीवन यूँ गँवाया है, जड़ धन के संचय में।
जड़ नाश हुआ रोया, अब सोच रहा मन में।।
अक्षय पद पा जाऊँ, करुणाकर सुखधामी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।।3।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ...।

पंचेन्द्रिय विषयों में, बेहोश पड़ा कब से।
चेतन गृह लूट गया, अपने ही विकारों से।।
अब होश मुझे आया, बन जाऊँ निष्कामी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।।4।।

ॐ रां रीं रूं रौं रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं ...।

यह रोग अनादि का, उपचार नहीं मिलता।
सब वैद्य हुए लाचार, शिवद्वार नहीं मिलता।।
दुष्कर्म असाता को, नाशो अंतर्यामी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।।5।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ...।

इक पवन झकोरे से, दीपक पल में बुझते।
प्रभु ज्ञान की ज्योति से, नव ज्ञान दीप जलते।।

अब पूर्णज्ञान भर दो, तुम हो केवलज्ञानी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।।6।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ...।

शुद्धात्म ध्यान करके, कर्मों को जलाना है।
सिद्धों की नगरी तक, मुझे धूम्र उड़ाना है।।
वसु कर्म नशें सारे, बन जाऊँ शिवगामी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।। 7।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय अष्टकर्मदहनाय धूपं ...।

शिवफल शाश्वत सुंदर, अनजान रहा इससे।
निज की ना सुध आयी, अब लगन लगी तुमसे।।
शिव रूप दिखा देना, हे जिनवर शिवधामी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।।8।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय मोक्षफलप्राप्तये फलं ...।

पग-पग पर भूल हुई, पर पद का मोल किया।
नहीं अनर्घ्य पद सूझा, निज को ही भूल गया।।
वसु द्रव्य मिला लाया, जिनपद दो अभिरामी।
हे शांतिनाथ भगवन्, मम हृदय बसो स्वामी।।9।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः सर्वशांतिप्रदायक श्रीशांतिनाथाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

प्रथम वलय अर्घ्यावली

-:: दोहा ::-

रत्नत्रय उर में धरूँ, करूँ पंच पद ध्यान।
परम ध्येय तुम ही प्रभो, शांतिनाथ भगवान ।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(अडिल्ल छंद)

तत्त्वों का जो स्वरूप है श्रद्धा धरूँ।
देव शास्त्र गुरु शुद्धातम पहचान करूँ।।

दोष पच्चीसों रहित अंग वसु को धरूँ।
शांतिनाथ पूजन से समकित आदरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनमोहविनाशक शुद्धसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

आप्तकथित जो द्वादशांग वाणी खिरी।
गणधर गूँथे महामुनिवर से बिखरी।।
जिन वचनामृत पीकर सम्यक्ज्ञान हो।
शांतिनाथ जिन जैसा केवलज्ञान हो।।2।।

ॐ ह्रीं मिथ्याज्ञानविनाशक शुद्धसम्यग्ज्ञानप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

'चारित्तं खलु धम्मो' तेरह विध कहा।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति तीनों महा।।
सम्यक्चारित प्राप्त करूँ यही भावना।
अतः करूँ मैं भावों से आराधना।।3।।

ॐ ह्रीं कषायविनाशक शुद्धसम्यक्चारित्रप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

छियालीस गुण युक्त अठारह दोष ना।
ऐसे श्री अरिहंतों की आराधना।।
भव सागर से पार उतरने हेतु हैं।
शांतिनाथ प्रभु की भक्ति शिव सेतु हैं।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्तीअर्हत्परमेष्ठीपदपंकजे कृतेज्याय घातिकर्मविनाशनाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

सिद्धप्रभु की अर्चना सुखदायी है।
पद प्रसिद्धि की कामना दुःखदायी है।।
क्षायिक सम्यक् आदि गुण युत सिद्ध हैं।
शांतिनाथ की शांति जगत प्रसिद्ध है।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्तीसिद्धपरमेष्ठीपदपंकजे कृतेज्याय सर्वकर्मबंधनविनाशनाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

तृतीय परमेष्ठी पदधारी यतिवरा।
छत्तीस गुण से सहित है योगीश्वरा।।
भूत भविष्यत वर्तमान आचार्य को।
अर्घ्य चढ़ाऊँ श्रद्धा से मुनिनाथ को।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्तीआचार्यपरमेष्ठीपदपंकजे कृतेज्याय असंयमविनाशनाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

द्वादशांग के ज्ञाता पाठक को नमूँ।
आत्म सुधा रस पीने को मन से जपूँ।।
उपाध्याय निज ज्ञान ध्यान में लीन हैं।
वंदन से अज्ञान होता क्षीण है।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्तीउपाध्यायपरमेष्ठीपदपंकजे कृतेज्याय अज्ञानविनाशनाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

तीन रत्न के धारी श्री मुनिराज हैं।
मन वच तन से गुरु पद में मम माथ है।।
देह धरे पर रहते देहातीत सम।
आत्म साधना में रहते मुनिवर परम।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्तीसाधुपरमेष्ठीपदपंकजे कृतेज्याय मिथ्यादर्शनादिविनाशनाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित उपकारी है।
पंच परम पद का चिंतन हितकारी है।।
परम इष्ट पद पाने अर्घ्य चढ़ा रहा।
शांतिप्रभु के पद में शीश नवा रहा।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकारकाय पंचपरमेष्ठीपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

द्वितीय वलय अर्घ्यावली

-:: सोरठा ::-

चउ आराधन सार, पंचम गति का हेतु है।
शिवपुर का आधार, बारह अनुप्रेक्षा कही ।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(नरेन्द्र छंद)

दोष रहित वसु गुण युत सम्यक्, दर्शन का आराधन ।
सम्यग्दर्शन बिन रहता है, व्यर्थ ज्ञान व्रत साधन।।
शांतिप्रभु ने महाराधना, पूर्व काल में धारी।
शीश झुकाऊँ भावों से यह, आराधन सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक-दर्शनाराधनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

ग्रंथाचारादिक वसु गुणमय, ज्ञानाराधन माना।
पूर्णज्ञान का कारण है यह, दिव्यध्वनि से जाना।।
जिनवर ने यह शुभाराधना, श्रद्धा से उरधारी।
शांतिप्रभु के श्री चरणों में, वंदन हो शिवकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक-ज्ञानाराधनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

दर्शन ज्ञान अनंतर होता, चारित का आराधन।
संवर निर्जर शिवपद हेतु, करते मुनिवर धारण।।
राग-द्वेष को तजकर मैं कब, सम्यक्चारित धारूँ।
शांतिनाथ के चरण कमल में, अपना जीवन वारूँ।। 3 ।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक-चारित्राराधनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

कर्मनाश का लक्ष्य बनाकर, ध्यान करें योगीजन।
विषय कषायादिक इच्छा तज, करते तप आराधन।।
शांतिप्रभु ने तपाराधना, भावों से जब भायी।
मुक्तिवधू तप मण्डप में ही, प्रभु को वरने आयी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक-तपाराधनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

नश्वर है संयोग सभी यह, जल बुद्बुद् सम माया।
धन यौवन है इंद्रधनुषवत्, नश्वर है यह काया।।
परम पवित्र अनित्य भावना, भावों से नित भाऊँ।
शांतिप्रभु सा नित्य परमपद, पाने अर्घ्य चढ़ाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-अनित्यभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

कालबली के आगे प्राणी, बेबस हैं बेचारे।
मंत्र तंत्र कुछ काम ना आता, सुर चक्री भी हारे।।
पंच परम गुरु औ शुद्धातम, जग में शरण प्रदाता।
शांतिप्रभु की शरण प्राप्त कर, अपना शीश झुकाता।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-अशरणभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

पंच परावर्तन कर चारों, गति में शांति न पाई।
पर द्रव्यों की लिप्सा में निज, आतम सुध ना आई।।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य चिदानंद, शांतिनाथ पद ध्याऊँ।
सब संसार भ्रमण को तजने, सविनय अर्घ्य चढ़ाऊँ।। 7।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-संसारभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

कर्म शुभाशुभ कर्ता भोक्ता, जीव अकेला होता।
पर में कर्ता बुद्धि करके, चउ गति में दुःख पाता।।
निज से निज में निजानुभव हो, यही भावना भाऊँ।
शांतिनाथ को उर में धर कर, मन वच तन से ध्याऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-एकत्वभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

निज आतम के सिवा जगत में, कोई नहीं है अपना।
पिता पुत्र पत्नी तन सब ये, झूठा है जग सपना।।
पर द्रव्यों से ममत्व तजकर, निज का दर्शन पाऊँ।
शांतिनाथ जिन पद में आकर, वांछित फल पा जाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-अन्यत्वभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

नव द्वारों से मलिन देह को, मोही अपना माने।
अनगिन सागर का जल तन को, शुद्ध नहीं कर पावे।।
पवित्र निर्मल शुद्धातम का, शाश्वत ही सुख पाऊँ।
शांतिनाथ की शुचि भावों से, पूजन कर हर्षाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-अशुचिभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मन वच तन के महाद्वार से, कर्म शुभाशुभ आते।
राग-द्वेष के कारण जग के, प्राणी भव दुःख पाते।।
निरास्रवी बन ज्ञानाश्रम में, निजानंद सुख पाऊँ।
शांतिनाथ जिनवर के दर पर, पूजन आज रचाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-आस्रवभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मिथ्यातम अविरति अज्ञान औ, योग रहित जब होवे।
आस्रव रोक पूर्ण संवर कर, परमातम पद पावे।।
निर्विकल्प शुद्धोपयोग मय, निज स्वरूप कब पाऊँ।
शांतिनाथ प्रभु का संबल पा, संवर कर सुख पाऊँ।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-संवरभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अकाम या सविपाक निर्जरा, सब जीवों को होती।
अविपाक तप ध्यान के द्वारा, कर्म मलों को धोती।।
निश्चय रत्नत्रय धारण कर, ज्ञानसूर्य प्रगटाऊँ।
शांतिनाथ सी आतम शांति, द्वादश तप से पाऊँ।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-निर्जराभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

छह द्रव्यों से परिपूर्ण यह, लोक अकृत्रिम सारा।
आत्म लोक को भूला चेतन, भटका मारा-मारा।।
समता धरकर ज्ञान लोक में, विचरण कर सुख पाऊँ।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, शांतिप्रभु को ध्याऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-लोकभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

काम बंध की कथा सुलभ है, आत्म कथा ना जानी।
मोह और अज्ञान के कारण, निज निधि ना पहचानी।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण युत, दुर्लभ बोधि भाऊँ।
शांतिनाथ के पद में सम्यक्, समाधि कर शिव जाऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-बोधिदुर्लभभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

उत्तम क्षमादि दस धर्मों औ, रत्नत्रय पहचानूँ।
आत्मधर्म को प्रगट करूँ मैं, स्व - पर तत्त्व को जानूँ।।
धर्म भावना का चिंतन कर, आत्म शांति को पाऊँ।
धर्म धुरंधर शांतिप्रभु को, अर्घ्य चढ़ा सिर नाऊँ।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वविभावविनाशनसमर्थ-धर्मभावनायै श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्यं

दर्शन ज्ञान चरित आराधन, तप धारूँ सुख पाऊँ।
अनित्यादि द्वादश अनुप्रेक्षा, चिंतन कर शिव जाऊँ।।
जल फलादि वसु अर्घ्य मिलाकर, प्रभु पद अग्र चढ़ाऊँ।
शांत छवि जिनवर की लखकर, सविनय शीश झुकाऊँ।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविभावविनाशनसमर्थ-चतुराराधनाद्वादशभावनायै श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

तृतीय वलय अर्घ्यावली

-:: दोहा ::-

भाऊँ सोलह भावना, तीर्थंकर पद हेतु।
प्रातिहार्य वसु गुण सहित, नमूँ नाथ शिव सेतु।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(विष्णुपद छंद - कहाँ गए चक्री.....)

दरश विशुद्धि प्रथम भावना प्रभुवर ने भायी।
सोलहवें तीर्थंकर पद की शुभ पदवी पायी।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं दर्शनविशुद्धिभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

रत्नत्रय औ रत्नत्रयधारी का विनय किया।
इसीलिए तीर्थंकर पद को प्रभु ने प्राप्त किया।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं विनयसम्पन्नताभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

पालन किया मुनीश्वर ने व्रत शीलों का निर्दोष।
कामदेव चक्री तीर्थंकर पद पाया गुण कोष।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

ज्ञान बाग में सदा विचरते शांतिनाथ मुनिनाथ।
वीतराग पद में नमता हूँ हाथ जोड़ नत माथ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

भव तन भोग विरक्त हुए संवेग निरंतर धार।
शांतिप्रभु मुझको कर देना भव सागर से पार।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं अभीक्ष्णसंवेगभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

निज शक्ति को विचार करके चउ विध दान दिया।
राग-द्वेष को त्यागा तीर्थंकर पद प्राप्त किया।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं शक्तितस्त्यागभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

इच्छाओं का निरोध करके बारह तप धारे।
शांतिनाथ तीर्थेश नमन हो हरो विघ्न सारे।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं शक्तितस्तपोभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

तपोनिष्ठ साधु के जिनने कष्ट निवारे हैं।
साधु समाधि से तीर्थंकर पदवी धारे हैं।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं साधुसमाधिभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

गुणवानों के दुःख दूर कर वैय्यावृत्य करें।
'पुण्य फला अरहंता' तीर्थंकर पद प्राप्त करें।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं वैय्यावृत्तिभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अर्हत् भक्ति पूजन करके तीर्थंकर बनते।
अर्घ्य चढ़ाकर शांतिप्रभु के पद में हम नमते।।10।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं अर्हत्भक्तिभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

परम पूज्य आचार्य देव की सम्यक् भक्ति हो।
तीर्थंकर पद धारण करके शाश्वत मुक्ति हो।।11।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं आचार्यभक्तिभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अंगपूर्व के ज्ञाता बहुश्रुत उपाध्याय वंदन।
तीर्थंकर पद का कारण मैं कर लूँ शुभ अर्चन।।12।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं बहुश्रुतभक्तिभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

रत्नत्रय प्रतिपादक आगम में अनुराग किया।
तीर्थंकर बन समवसरण में सद् उपदेश दिया।।13।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं प्रवचनभक्तिभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

यथाकाल में छह आवश्यक करते जो प्राणी।
तीर्थंकर पद का कारण यह कहती जिनवाणी।।14।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं आवश्यकापरिहाणिभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

जिन पथ की हो प्रभावना बस यही भावना है।
शांतिप्रभु का पथ पा जाऊँ यही कामना है।।15।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं मार्गप्रभावनाभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

साधर्मी से निश्छल औ निष्काम नेह रखना।
जगत पूज्य तीर्थंकर का पद पाकर शिव वरना।।16।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरपदप्राप्त्यर्थं प्रवचनवत्सलत्वभावनाविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अष्ट प्रातिहार्य

(नरेन्द्र छंद)

शत इंद्रों से पूज्य शांतिप्रभु, प्रातिहार्य वसु धारी।
प्रथम अशोक वृक्ष है पार्थिव, मरकत मणि दल[1] धारी।।
प्रभु से द्वादश गुणी ऊँचाई, देव रचित तरु माना।
रोग शोक से रहित रहूँ नित, लक्ष्य यही शिव पाना।।17।।

ॐ ह्रीं आत्मवैभवप्राप्त्यर्थं ह्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षरसहित-अशोकवृक्षप्रातिहार्यविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

सघन पुष्प की वृष्टि करते, नभ से सुर हर्षाते।
ऊर्ध्वमुखी हो फूल बरसते, विनम्रता सिखलाते।।

दल[1] = पत्ते

शांतिप्रभु की पूजन से सब, विधि बंधन नश जायें।
संयम से सुरभित हो जीवन, यही भावना भायें।।18।।

ॐ ह्रीं आत्मवैभवप्राप्त्यर्थं भ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षरसहित-पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

शांतिप्रभु के वचनामृत को, पीते प्रमुदित होते।
मोह तमस को हरने वाले, सभी समझ हैं पाते।।
प्रभु की वाणी इक योजन तक, दूर सुनाई देती।
अठरह सात शतक मय भाषी, स्वानुभूति को देती।।19।।

ॐ ह्रीं आत्मवैभवप्राप्त्यर्थं म्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षरसहित-दिव्यध्वनिप्रातिहार्यविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

सालंकृत हो देव शरण आ, चांसठ चँवर ढुराते।
नम्रभूत हो श्वेत चँवर ये, विनय पाठ सिखलाते।।
शांति जिनेश्वर की मूरत को, मन मंदिर में धारूँ।
प्रभुवर तुम बिन कोई न मेरा, श्रद्धा सहित पुकारूँ।।20।।

ॐ ह्रीं आत्मवैभवप्राप्त्यर्थं र्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षरसहित-चँवरप्रातिहार्यविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

समवसरण के मध्य रत्न का, सिंहासन अति राजे।
मध्य सहसदल कमल सुशोभित, अधर प्रभु जी राजे ।।
सेवक बन सुर शांतिनाथ की, पूजन कर हर्षाते।
जग वैभव सब छोड़ दिए पर, वैभव पीछे आते।।21।।

ॐ ह्रीं आत्मवैभवप्राप्त्यर्थं घ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षरसहित-सिंहासनप्रातिहार्यविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

घातिकर्म का क्षय होते ही, भामण्डल बन जाता।
कोटि सूर्य की कांति हरता, चंदा भी शरमाता।।
सात भवों को भव्य देखकर, निज वैभव को पाता।
शांतिप्रभु की देहप्रभा लख, चरणन शीश नवाता।।22।।

ॐ ह्रीं आत्मवैभवप्राप्त्यर्थं झ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षरसहित-भामण्डलप्रातिहार्यविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

जागो-जागो जग के प्राणी, प्रभु जगाने आये।
वीणा मुरली दुंदुभि बाजे, वाद्य बजा के गाये।।

मोक्षनगर में आना है तो, शांतिनाथ शरणा लो।
गगन पंथ में देवों द्वारा, बजे नगाड़े सुन लो।।23।।

ॐ ह्रीं आत्मवैभवप्राप्त्यर्थं स्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षरसहित-दुंदुभिप्रातिहार्यविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

तीन जगत के ईश शांतिप्रभु, तीन छत्र बतलाते।
गुरु लघु लघुतम क्रम से ऊपर, शुभ्र रत्नमय होते।।
छत्र चन्द्र सम मुक्ता लड़ियाँ, मानो तारागण है।
छत्र छाँव जिनवर की पाऊँ, जीवन सब अर्पण है।।24।।

ॐ ह्रीं आत्मवैभवप्राप्त्यर्थं ख्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षरसहित-छत्रत्रयप्रातिहार्यविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

(सखी छंद)

जब ज्ञानावरण नशाया, तब केवलज्ञान उपाया।
हे शांतिनाथ जिनराया, तव पूजन करने आया।।25।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मविनाशक केवलज्ञानप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

दर्शन आवरण विनाशी, गुण अनंत दर्शन राशी।
हे शांतिनाथ जिनराया, तव पूजन करने आया।।26।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मविनाशक केवलदर्शनप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

द्वय वेदनीय क्षयकारी, गुण अव्याबाध सु-धारी।
हे शांतिनाथ जिनराया, तव पूजन करने आया।। 27 ।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मविनाशक अव्याबाधगुणप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

सब मोह कर्म रिपु जीते, क्षायिक समकित रस पीते।
हे शांतिनाथ जिनराया, तव पूजन करने आया।।28।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविनाशक क्षायिकसम्यक्त्वगुणप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

प्रभु आयु कर्म चउ नाशे, अवगाहन सुगुण प्रकाशे।
हे शांतिनाथ जिनराया, तव पूजन करने आया।।29।।

ॐ ह्रीं आयुकर्मविनाशक अवगाहनत्वगुणप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

प्रभु नाम कर्म विनशाया, सूक्ष्मत्व सुगुण प्रगटाया।
हे शांतिनाथ जिनराया, तव पूजन करने आया।।30।।

ॐ ह्रीं नामकर्मविनाशक सूक्ष्मत्वगुणप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

द्वय गोत्र कर्म विनशाया, गुण अगुरुलघु को पाया।
हे शांतिनाथ जिनराया, तव पूजन करने आया।।31।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मविनाशक अगुरुलघुत्वगुणप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

जब अंतराय विनशाया, तब नंत वीर्य गुण पाया।
हे शांतिनाथ जिनराया, तव पूजन करने आया।।32।।

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मविनाशक अनंतवीर्यगुणप्राप्तये श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(नरेन्द्र छंद)

तीर्थंकर पद प्राप्ति हेतु मैं, सोलह भावन भाऊँ।
अर्हत् वैभव प्रातिहार्य लख, आठों कर्म नशाऊँ।।
चउ निकाय देवों से अर्चित, शांतिप्रभु को ध्याऊँ।
अनर्घ्य पद हित अर्घ्य चढ़ाकर, भवसागर तर जाऊँ।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकपूजितद्वात्रिंशत्गुणविभूषित-श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घ्यं...।

चतुर्थ वलय अर्घ्यावली

-::दोहा::-

शांतिनाथ जिनराय जी, ऋद्धि-सिद्धि दातार।
शाश्वत शांति हेतु मैं, नमूँ चरण सुखकार।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

बुद्धि ऋद्धि के अठारह भेद

(नरेन्द्र छंद)

अवधि ऋद्धि के धारी मुनिवर, मूर्त्त द्रव्य पहचाने।
अणु से लेकर महास्कंध तक, सीमा में ही जाने।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
अनंत सुख पाने आया प्रभु, सुनिये अरज हमारी ।।1।।

ॐ ह्रीं शिरोरोगविनाशनसमर्थ-अवधिज्ञानबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मनुज लोक के भीतर चिंतित, और अचिंतित जाने।
पर के मन की ऋजु कुटिल सब, मनःपर्यय पहचाने।।

शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
मन विकार तजने आया प्रभु, सुनिये अरज हमारी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्न अशांतिविनाशनसमर्थ-मनःपर्ययज्ञानबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

चार घाति कर्मों का क्षयकर, केवलज्ञान उपाया।
युगपत् लोकालोक प्रकाशी, बुद्धि ऋद्धि को पाया।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
पूर्णज्ञान पाने आया प्रभु, सुनिये अरज हमारी।।3।।

ॐ ह्रीं विसूचिकाज्वरादिरोगविनाशनसमर्थ-केवलज्ञानबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

शब्द रहे संख्यात किंतु यह, नंत अर्थ पहचाने।
बीज वृक्ष बन जाए जैसे, एक बीज बहु जाने।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
हृदय बीज पावन हो मेरा, सुनिये अरज हमारी।।4।।

ॐ ह्रीं हृदयरोगविनाशनसमर्थ-बीजबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

कोठे में ज्यों अन्न भरे त्यों, ज्ञान सुरक्षित रहता।
सर्व द्रव्य पर्यय को जाने, कोष्ठ बुद्धि को नमता।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
श्रेष्ठ धारणा बुद्धि हो प्रभु, सुनिये अरज हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं ममात्मनिविवेकज्ञानजाग्रताय-कोष्ठबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

गुरु कृपा से ग्रंथों के इक, पद को पढ़ सब जानें।
तीन भेद पादानुसारिणी, वंदूँ ज्ञान बढ़ाने।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
गुरु कृपा हो मम जीवन में, सुनिये अरज हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं परस्परविरोधविनाशनसमर्थ-पादानुसारिणी बुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

कर्णेन्द्रिय उत्कृष्ट विषय के, बाह्य ध्वनि सुन लेते।
अक्षर और अनक्षर युगपत्, सुन प्रतिपादन करते।।

शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
अंत समय प्रभु नाम श्रवण हो, सुनिये अरज हमारी।। 7।।

ॐ ह्रीं श्वासरोगविनाशनसमर्थ - संभिन्नसंश्रोतृबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

समता रस पीने से उपजी, दूरास्वादन ऋद्धि।
रसनेन्द्रिय उत्कृष्ट विषय से, अधिक ज्ञान की वृद्धि।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
मोक्ष महाफल का रस पीऊँ, सुनिये अरज हमारी।। 8 ।।

ॐ ह्रीं चोरादिभयविनाशनसमर्थ-दूरास्वादित्वबुद्धिऋद्धिविभूषित- श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

स्पर्शन के उत्कृष्ट विषय से, अधिक योजनों जाने।
तप बल से यह ऋद्धि प्रगटी, नमन करूँ सुख पाने।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
विषय भोग से विरत रहूँ प्रभु, सुनिये अरज हमारी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वराज्यादिभयविनाशनसमर्थ-दूरस्पर्शत्वबुद्धिऋद्धिविभूषित- श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

घ्राणेन्द्रिय उत्कृष्ट विषय से, अधिक योजनों जाने।
श्रेष्ठ क्षयोपशम से होती है, नमूँ आत्म निधि पाने।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
दुर्भावों की गंध मिटा दो, सुनिये अरज हमारी।।10।।

ॐ ह्रीं नासिकारोगविनाशनसमर्थ-दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

बारह योजन से आगे भी, कई योजनों सुनते।
दिव्यध्वनि की श्रद्धा करके, दूरश्रवण पा लेते।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
समवसरण में ध्वनि श्रवण हो, सुनिये अरज हमारी।। 11।।

ॐ ह्रीं कर्णरोगविनाशनसमर्थ-दूरश्रवणत्वबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

चक्षु के उत्कृष्ट क्षेत्र के, बाहर दृष्टा होते।
शुद्धातम के दर्शक हैं ये, भावों से हम नमते।।

शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
आतम दृष्टा बन जाऊँ प्रभु, सुनिये अरज हमारी।।12।।

ॐ ह्रीं अक्षिरोगविनाशनसमर्थ-दूरदर्शित्वबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

दशम पूर्व पढ़ने पर लघु औ, महान विद्या आती।
निश्चल अभिन्न दश पूर्वी लख, झुक-झुक शीश नवाती।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
शुद्धातम का संवेदन हो, सुनिये अरज हमारी।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वसंवेदनाय-दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अंगपूर्व सब श्रुत के ज्ञाता, चौदह पूर्वी होते।
देव पूजते दृढ़ श्रद्धा से, चरणों में नत होते।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
अल्पमति मम पूर्णमति हो, सुनिये अरज हमारी।।14।।

ॐ ह्रीं स्वसमयपरसमयसंवेदनाय-चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अंग चिह्न स्वर व्यंजन लक्षण, स्वप्न और नभ भूमी।
तपश्चरण के बल से होते, अष्ट निमित्तक ज्ञानी।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
जन मन तन रंजन से छूटूँ, सुनिये अरज हमारी।। 15 ।।

ॐ ह्रीं जीवितमरणादिज्ञानयुक्त-अष्टाङ्गमहानिमित्तबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

बिना अध्ययन ऋद्धि बल से, प्रज्ञा श्रमण कहाते।
चार भेद युत इस ऋद्धि को, सादर शीश झुकाते।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
प्रभु वाणी मम हृदय रहे नित, सुनिये अरज हमारी।।16।।

ॐ ह्रीं आयुष्यावसानसंवेदनज्ञानयुक्त-प्रज्ञाश्रमणत्वबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

निश्चय आतम गुरु आश्रय से, उपजी है यह बुद्धि।
बाह्य बिना उपदेश गुरु के, होती है यह ऋद्धि।।

शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
राग-द्वेष का प्रपंच छूटे, सुनिये अरज हमारी।।17।।
ॐ ह्रीं प्रतिवादविद्याविनाशनसमर्थ-प्रत्येकबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मिथ्यामत औ वृहस्पति को, करें निरूत्तर ज्ञानी।
यही श्रेष्ठ वादित्व ऋद्धि है, कहती माँ जिनवाणी।।
शांतिनाथ तीर्थंकर चक्री, कामदेव पदधारी।
रहे जिनागम पर दृढ़ श्रद्धा, सुनिये अरज हमारी।।18।।
ॐ ह्रीं सर्वराजाप्रजादिप्रतिवादविनाशनसमर्थ-वादित्वबुद्धिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

विक्रिया ऋद्धि के ग्यारह भेद

परमाणु सा तन धारण कर, सूक्ष्म छिद्र से निकले।
चक्री कटक बनावे पल में, पाप कर्म भी पिघले।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
कर्म उपद्रव नाश हेतु मैं, आया शरण तिहारी।।19।।
ॐ ह्रीं दुर्भिक्षादि उपद्रवविनाशनसमर्थ-अणिमाविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मेरु बराबर तन धारण कर, जग उपकार करे हैं।
विष्णु कुमार मुनी विक्रिय धर, भविजन नमन करे हैं।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
महिमामय अनंत गुण पाने, आया शरण तिहारी।।20।।
ॐ ह्रीं सर्ववृक्षलतामारींविनाशनसमर्थ-महिमाविक्रियाऋद्धिविभूषित- श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

देह पवन सी हल्की करते, लघिमा ऋद्धिधारी।
देह रहित होने वाले हैं, मुक्ति के अधिकारी।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
लघुता से प्रभुता को पाने, आया शरण तिहारी।।21।।
ॐ ह्रीं वातपित्तविकारादिविनाशनसमर्थ-लघिमाविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

गरिमा ऋद्धि के प्रभाव से, भारी देह बनावे।
सर्व जगत उपकारी हैं यह, सुर नर शीश नवावें।।

ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
आतम गौरव गरिमा पाने, आया शरण तिहारी।।22।।

ॐ ह्रीं समस्तबंधनविनाशनसमर्थ-गरिमाविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

धरती से सूरज चंदा औ, मेरू शिखर छू लेते।
निज आतम को छूने वाले, प्राप्ति ऋद्धि पा लेते।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
शाश्वत सुख की प्राप्ति हेतु मैं, आया शरण तिहारी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वमनोवांछितसिद्धिसहित-प्राप्तिविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

जल में थल सम, थल में जल सम, सहज गमन ही करना।
यह प्राकाम्य विक्रिया ऋद्धि, जिनवाणी का कहना।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
तत्त्व ज्ञान का जल पाने मैं, आया शरण तिहारी।।24।।

ॐ ह्रीं सर्पादिविषविनाशनसमर्थ-प्राकाम्यविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

सारे जग में प्रभुता छाये, सब जन करे प्रशंसा।
शुभ ईशत्व ऋद्धि को पूजूँ, वचन काय औ मनसा।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
यश अपयश में समता पाने, आया शरण तिहारी।।25।।

ॐ ह्रीं सर्वराजसम्मानसहित-ईशत्वविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मन को वश में करने से ही, तीन लोक वश होते।
शुभ वशित्व ऋद्धि के धारी, परमातम पद पाते।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
मन मंदिर पावन हो मेरा, आया शरण तिहारी।।26।।

ॐ ह्रीं सर्वतंत्रमंत्रविद्या,बंधनविनाशनसमर्थ-वशित्वविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

पर्वत शिला वृक्ष आदिक में, छेद किये बिन चलते।
अप्रतिघात विक्रिया है यह, भावों से हम नमते।।

ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
निज स्वरूप में सहज गमन हो, आया शरण तिहारी।।27।।

ॐ ह्रीं दुष्टजनादिकृतभयविनाशनसमर्थ-अप्रतिघातविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

बैठे चलते अदृश्य होते, नहीं किसी को दिखते।
अंतर्धान ऋद्धि बल धारी, निज में ही खो जाते।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
सिद्ध साक्षी में दीक्षा हो प्रभु , आया शरण तिहारी।।28।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षीदीक्षासमाधिसुखप्रदानसमर्थ-अंतर्धानविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

भावों के अनुसार देह के, रूप अनेकों धरते।
काम रूपी ऋद्धि के धारी, काम क्रोध को हरते।।
ऐसी श्रेष्ठ ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ हितकारी।
रूपातीत स्वरूप प्राप्ति हो, आया शरण तिहारी।।29।।

ॐ ह्रीं कामितवस्तुप्रदानसमर्थ-कामरूपित्वविक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

चारण ऋद्धि के नव भेद

पद्मासन या खड्गासन से, सहज गगन में चलते।
नभ तल गामी ऋद्धिधर को, मन वच तन से नमते।।
ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
ज्ञान गगन में विहार हो बस, यही भावना भाऊँ।।30।।

ॐ ह्रीं अंतरिक्षगमनप्रदानसमर्थ-नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

जल पर चलते कभी न थकते, जीव घात ना होवे।
मेघ धार चारण ऋद्धि यह, कर्म मलों को धोवे।।
ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
पापों का प्रक्षालन हो मम, यही भावना भाऊँ।।31।।

ॐ ह्रीं अतिवृष्टिअल्पवृष्टिअसमयवृष्टिभयविनाशनसमर्थ-जलचारणक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

चउ अंगुल भू के ऊपर, बिन घुटने मोड़े चलते।
जंघा बल से खड़े-खड़े ही, तीर्थंकर सम चलते।।

ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
अनंत बल को पा जाऊँ मैं, यही भावना भाऊँ।।32।।

ॐ ह्रीं नष्टपदार्थचिंताविनाशनसमर्थ-जंघाचारणक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

कोपल फूलों फल पत्तों पर, चलते जीव न मरते।
पत्र पुष्प फल चारण ऋद्धि , को भावों से नमते।।
ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
सुखी रहें सब जीव जगत के, यही भावना भाऊँ।।33।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकृतविषवेदनाविनाशनसमर्थ-फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अग्नि शिखा औ धूम्र कणों पर, चिनगारी पर चलते।
अग्नि धूम चारण ऋद्धिधर, हिंसा से नित बचते।।
ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
ध्यान अग्नि से कर्म जले सब, यही भावना भाऊँ।।34।।

ॐ ह्रीं भूकंपादिभयविनाशनसमर्थ-अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

काले बादल मूसल जैसी, जलधारा बरसाते।
मेघ धार पर चलते निर्भय, किञ्चित् ना घबराते।।
ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
बहे ज्ञान की धार निरंतर, यही भावना भाऊँ।।35।।

ॐ ह्रीं तडितभयविनाशनसमर्थ-मेघधाराचारणक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मकड़ी के तंतु पर चलते, किंतु तंतु ना हिलता।
तंतु चारण क्रिया ऋद्धि से, कोई जंतु ना मरता।।
ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
दृढ़ संकल्पित मन हो मेरा, यही भावना भाऊँ।।36।।

ॐ ह्रीं सर्वाङ्गपीड़ाविनाशनसमर्थ-तंतुचारणक्रियाऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

रवि शशि तारे ग्रह नक्षत्र की, किरणों पर हैं चलते।
ज्योतिश्चारण से कई योजन, चलते कभी न थकते।।

ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
केवलज्ञान की ज्योति जगे प्रभु, यही भावना भाऊँ।।37।।

ॐ ह्रीं नवग्रहपीड़ाविनाशनसमर्थ-ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धिविभूषित- श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

वायु पंक्ति पर कोसों चलते, श्रेष्ठ कांति के धारी।
मरुच्चारणा क्रिया ऋद्धि यह, सर्व जगत उपकारी।।
ऐसी ऋद्धि सिद्धि के दाता, शांतिनाथ गुण गाऊँ।
पुण्य फलों में लिप्त न होऊँ, यही भावना भाऊँ।। 38 ।।

ॐ ह्रीं प्रचण्डपवनोद्भवभयविनाशनसमर्थ-मरुच्चारणक्रियाऋद्धिविभूषित- श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

तप ऋद्धि के सात भेद

दीक्षा से मरणांत काल तक, अधिक-अधिक तप बढ़ता।
उग्र तपो ऋद्धि को नमते, कर्म भार है घटता।।
शांतिनाथ वांछित फल दाता, दर्श आपका पाया।
कर्मोदय में समता पाने, चरण शरण में आया।।39।।

ॐ ह्रीं भण्डवचनादिकृतपीड़ाविनाशनसमर्थ-उग्रतपऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

भोजन बिन तन दीप्ति बढ़ती, बेला तेला करते।
देह श्वास की सुरभि बढ़ती, दीप्त ऋद्धि को नमते।।
शांतिनाथ वांछित फल दाता, दर्श आपका पाया।
निराहार निज स्वरूप पाने, चरण शरण में आया।।40।।

ॐ ह्रीं सेनादिकृतभयविनाशनसमर्थ-दीप्ततपऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

तप्त लोह पर जल मिट जाता, त्यों आहार करे हैं।
तप बल से मलमूत्र न होता, आतम शक्ति बढ़े हैं।।
शांतिनाथ वांछित फल दाता, दर्श आपका पाया।
भव-भव का संताप मिटाने, चरण शरण में आया।।41।।

ॐ ह्रीं अग्निभयविनाशनसमर्थ-तप्ततपऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

चार ज्ञान बहु ऋद्धिधर ही, महान तप के धारी।
मास-मास उपवास करें हैं, होते शिव अधिकारी।।

शांतिनाथ वांछित फल दाता, दर्श आपका पाया।
वैर पाप अभिमान नशाने, चरण शरण में आया।।42।।

ॐ ह्रीं नदीसरोवरकूपादिभयविनाशनसमर्थ-महातपऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

रोगी तन होकर भी वन में, घोर तपस्या करते।
क्रूर भयंकर चीत्कारों को, सुनकर ना घबराते।।
शांतिनाथ वांछित फल दाता, दर्श आपका पाया।
इच्छाओं पर जय पाने प्रभु , चरण शरण में आया।।43।।

ॐ ह्रीं विषरोगादिभयविनाशनसमर्थ-घोरतपऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथायअर्घ्यं...।

लोक पलट दे सिंधु सुखा दे, घोर पराक्रम धारी।
समर्थ होकर भी नहीं करते, करुणाकर उपकारी।।
शांतिनाथ वांछित फल दाता, दर्श आपका पाया।
कर्म उदय पर जय पाने प्रभु, चरण शरण में आया।। 44।।

ॐ ह्रीं दुष्टसर्पसिंहसंग्रामादिभयविनाशनसमर्थ-घोरपराक्रमतपऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

प्रशम मूर्ति निर्दोष मेरु सम, ब्रह्मचर्य व्रत धारी।
अघोर ब्रह्मचारी ऋद्धि के, दर्शन अतिशयकारी।।
शांतिनाथ वांछित फल दाता, दर्श आपका पाया।
परम ब्रह्म पद पाने को प्रभु, चरण शरण में आया।।45।।

ॐ ह्रीं भूतप्रेतादिभयविनाशनसमर्थ-अघोरब्रह्मचारित्वतपऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

बल ऋद्धि के तीन भेद

अन्तर्मुहूर्त में सब श्रुत का, चिंतन कर ना थकते।
मन बल ऋद्धि के प्रभाव की, महिमा ना कह सकते।।
अनुपम आत्मसिद्धि को पाने, शांतिप्रभु को ध्याऊँ।
चंचल मन में स्थिरता पाने, चरणन शीश झुकाऊँ।।46।।

ॐ ह्रीं अपस्माररोगादिभयविनाशनसमर्थ-मनोबलऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अन्तर्मुहूर्त में सब श्रुत को, पढ़े कंठ ना थकता।
वचन बली को वच सिद्धि हो, जैनागम यह कहता।।
अनुपम आत्मसिद्धि को पाने, शांतिप्रभु को ध्याऊँ।
वचन विकार मिटाने भगवन्, चरणन शीश झुकाऊँ।।47।।

ॐ ह्रीं गोअजमारींविनाशनसमर्थ-वचनबलऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

ध्यान लगाते बहुत काल तक, नहीं काय बल घटता।
लोक कनिष्ठा पर रख सकते, काय बली को नमता।।
अनुपम आत्मसिद्धि को पाने, शांतिप्रभु को ध्याऊँ।
उत्तम संहनन पाने भगवन्, चरणन शीश झुकाऊँ।।48।।

ॐ ह्रीं महिषमारींविनाशनसमर्थ-कायबलऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

औषधि ऋद्धि के आठ भेद

व्याधि भयंकर जिनके तन को, छूने से नश जाती।
शुभ आमर्श औषधि ऋद्धि, हितकारी कहलाती।।
ऐसी पूज्य ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ सुखधामी।
रोग शोक से दूर रहे सब, यही भावना स्वामी।।49।।

ॐ ह्रीं प्रलापनचिंताविनाशनसमर्थ-आमर्शौषधिऋद्धिविभूषित श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

जिनके कफ से स्पर्शित मारुत, तन के रोग मिटाता।
खेल्लौषधि शुभ ऋद्धि का मैं, श्रद्धा से गुण गाता।।
ऐसी पूज्य ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ सुखधामी।
ऋषिवर का प्रत्यक्ष दर्श हो ,यही भावना स्वामी।।50।।

ॐ ह्रीं सर्वापमृत्युविनाशनसमर्थ-खेल्लौषधिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

तप के कारण बाह्य अंग मल, परम औषधी बनता।
भव व्याधि हरने वाली मैं, जल्लौषधि को नमता।।
ऐसी पूज्य ऋद्धि के दाता,शांतिनाथ सुखधामी।
हो निरोग सब शिवपथ गामी, यही भावना स्वामी।।51।।

ॐ ह्रीं जन्मजन्मांतरवैरभावविनाशनसमर्थ-जल्लौषधिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

कर्णादिक का मल तप बल से, परम औषधी बनता।
कर्म मलों की हारक ऋद्धि, मल्लौषधि को नमता।।
ऐसी पूज्य ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ सुखधामी।
त्रिविध कर्म मल नाश करूँ मैं, यही भावना स्वामी।।52।।

ॐ ह्रीं मनुष्यामरोपसर्गविनाशनसमर्थ-मल्लौषधिऋद्धिवि भूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मल मूत्रादिक स्पर्शित वायु, तन के रोग नशाता।
विप्रुष औषध ऋद्धि को मैं, सादर शीश नवाता।।
ऐसी पूज्य ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ सुखधामी।
मंगलमय हो जीवन सबका, यही भावना स्वामी।।53।।

ॐ ह्रीं गजमारीविनाशनसमर्थ-विप्रुषौषधिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

तन को छू कर जल और वायु, सर्व औषधी बनता।
दुखियों के दुख पल में हरता, भावों से मैं नमता।।
ऐसी पूज्य ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ सुखधामी।
मैत्री भाव हो सबसे मेरा , यही भावना स्वामी।।54।।

ॐ ह्रीं सर्वभयविनाशनसमर्थ-सर्वौषधिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

मुख निर्विष औषध ऋद्धि से, वचन औषधी बनता।
जीव व्याधि से मुक्त तुरत हो, कर्म असाता नशता।।
ऐसी पूज्य ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ सुखधामी।
जिन वचनों की औषध पाऊँ, यही भावना स्वामी।। 55।।

ॐ ह्रीं मृगीरोगविनाशनसमर्थ-मुखनिर्विषऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

जहर व्याप्त जन निर्विष होते, अमृत दृष्टि पाकर।
दृष्टि निर्विष ऋद्धि वंदूँ, अपना शीश झुकाकर।।
ऐसी पूज्य ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ सुखधामी।
मोह जहर मेरा नश जाए, यही भावना स्वामी।।56।।

ॐ ह्रीं वननगमेदिनीकृतविघ्नविनाशनसमर्थ-दृष्टिनिर्विषऋद्धिविभूषित- श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

रस ऋद्धि के छह भेद

आशीर्विष रस के प्रभाव से, वचन प्रभावी रहते।
मर जाओ कहते ही मरते, पर प्रयोग ना करते।।
अतिशयकारी इस ऋद्धि के, दाता शांति जिनेश्वर।
मधुर वचन की शक्ति देना, नमन करूँ तीर्थेश्वर।।57।।

ॐ ह्रीं विद्वेषप्रतिहतादिभयविनाशनसमर्थ-आशीविषरसऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

कोप दृष्टि से जिसको देखे, वह प्राणी मर जाए।
किंतु नहीं उपयोग करे वह, दयासिंधु कहलाए।।
अतिशयकारी इस ऋद्धि के, दाता शांति जिनेश्वर।
क्रोध शत्रु का नाश कीजिए, नमन करूँ तीर्थेश्वर।।58।।

ॐ ह्रीं स्थावरजंगमकृतविघ्नविनाशनसमर्थ-दृष्टिविषरसऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

रस विहीन भोजन कर में आ, मिष्ट दुग्ध सम होता।
क्षीरस्रावि रस के प्रभाव से, वचन क्षीर सम होता।।
अतिशयकारी इस ऋद्धि के, दाता शांति जिनेश्वर।
क्षमा क्षीर सिंधु को पाने, नमन करूँ तीर्थेश्वर।।59।।

ॐ ह्रीं अष्टादशकुष्टगण्डमालादिरोगविनाशनसमर्थ-क्षीरस्राविरसऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

रूक्ष भोज्य कर पात्र में आकर, मिष्ट मधुर हो जाता।
मधुस्रावि रस के प्रभाव से, वचन मिष्ट सम होता।।
अतिशयकारी इस ऋद्धि के, दाता शांति जिनेश्वर।
विश्व शांति हो यही अरज है, नमन करूँ तीर्थेश्वर।।60।।

ॐ ह्रीं समस्तोपसर्गविनाशनसमर्थ-मधुस्राविरसऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अमृतस्रावी से वाणी में, अमृत झरना झरता।
नीरस या विषमय भोजन भी, कर में अमृत बनता।।
अतिशयकारी इस ऋद्धि के, दाता शांति जिनेश्वर।
सम्यक् ज्ञानामृत को पाने, नमन करूँ तीर्थेश्वर।।61।।

ॐ ह्रीं समस्तआधिव्याधिविनाशनसमर्थ-अमृतस्राविरसऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

रूखा भोजन भी कर में आ, घृत सम पुष्टि करता।
घृतस्रावी ऋद्धि से वच भी, रोग शोक को हरता।।
अतिशयकारी इस ऋद्धि के, दाता शांति जिनेश्वर।
साधर्मी से स्नेह भाव हो, नमन करूँ तीर्थेश्वर।।62।।

ॐ ह्रीं शीतज्वरादिविकारविनाशनसमर्थ-सर्पि:स्राविरसऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अक्षीण महानस ऋद्धि के दो भेद

चक्री सैन्य भी भोजन कर ले, अहार हो जिस घर में।
है अक्षीण महानस ऋद्धि, वस्तु घटे ना दिन में।।
इस महान ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ जगनामी।
क्षुधा रोग का नाश कीजिए, हे जिनवर शिवधामी।।63।।

ॐ ह्रीं समस्तदानांतरायकर्मविनाशनसमर्थ-अक्षीणमहानसऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

अल्पभूमि में अनगिन प्राणी, मैत्री भाव से रहते।
है अक्षीण महालय ऋद्धि, भविजन शीश नवाते।।
इस महान ऋद्धि के दाता, शांतिनाथ जगनामी।
सिद्धालय हो आलय मेरा, हे जिनवर शिवधामी।।64।।

ॐ ह्रीं समस्तविधदरिद्रताविनाशनसमर्थ-अक्षीणमहालयऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

बुद्धि विक्रिया चारण तप बल, औषध रस सब ऋद्धि।
शुभ अक्षीण ऋद्धि युत होकर, शाश्वत पाई सिद्धि।।
ऋद्धि सिद्धिधर शांतिप्रभु के, पद में अर्घ्य चढ़ाऊँ।
रोग शोक का हेतु कर्म है, उसको 'पूर्ण' नशाऊँ।।65।।

ॐ ह्रीं अनंतसुखप्राप्त्यर्थं सर्वदु:खविनाशनसमर्थ-चतु:षष्ठिऋद्धिविभूषित-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

महार्घ्य

(चौबोला छंद)

अनंत भव को व्यर्थ गँवाया, धर्म रागमय पहचाना।
भव तन भोगासक्त रहा मैं, वीतराग पथ ना जाना।।

प्रबल सातिशय पुण्योदय से, शांतिनाथ दर्शन पाया।
सांसारिक सुख नहीं चाहता, अनर्घ्य पद पाने आया।।66।।

ॐ ह्रीं आत्मिकसर्वगुणप्राप्त्यर्थं सर्वदोषविनाशनसमर्थ-शतैकविंशतिगुणविभूषित-श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं...।

-:: जाप्य ::-

ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

-:: दोहा ::-

मंगल उत्तम शरण हैं, शांतिनाथ भगवान।
गुण वर्णन कैसे करूँ, प्रभु अनंत गुणखान।।1।।
स्वारथ का संसार सब, स्वारथ का परिवार।
इस असार संसार में, जिन पूजा ही सार।।2।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय जय श्री शांतिप्रभु जी, सिद्धालय सुखधामी हैं।
दोष अठारह रहित हुए प्रभु, अनंत गुण के स्वामी हैं।।
शांति विधायक शांति जिनेश्वर, नर सुरपति से वंदित हैं।
सोलहवें तीर्थंकर स्वामी, तीन लोक में पूजित हैं।।3।।
द्वादश कामदेव चक्रीश्वर, पंचम पद के धारी हैं।
बालपने से अणुव्रत धारा, प्राणी मात्र हितकारी हैं।।
छह खंडों के अधिपतियों को, शीघ्र आपने जीत लिया।
चक्र दिखाकर मात्र पुण्य से, चक्री का नहीं मान किया।।4।।
नव निधि चौदह रत्न प्राप्तकर, धर्मादि पुरुषार्थ किया।
जाति स्मरण जब हुआ आपको, राज तजा वैराग्य लिया।।
रत्नत्रय साधन के द्वारा, तुमने जिनपद राज किया।
चक्रवर्ती की अतुल निधि का, सहज भाव से त्याग किया।।5।।
सुमित्र राजा ने श्रद्धा से, विधिपूर्वक आहार दिया।
क्षीरधार मुनि कर में देकर, शिवपथ को पहचान लिया।।
क्षपक श्रेणी आरूढ़ हुए तब, केवलज्ञान प्रकाश किया।
विचरण करके देश-देश में, मोक्षमार्ग उपदेश दिया।।6।।
राज्य दशा में चक्ररत्न के, भय से नृप ने नमन किया।
प्रगट हुई चिद्रूप दशा तो, श्रद्धा से तव शरण लिया।।

श्री सम्मेदशिखर पर स्वामी, शुक्लध्यान आसीन हुए।
कूट कुंदप्रभ पुनीत धरा से, सिद्धक्षेत्र में पहुँच गए।।7।।
सुविधिनाथ से धर्मनाथ तक, धर्मतीर्थ व्युच्छिन्न हुआ।
शांतिनाथ से सदा प्रवाहित, जैन धर्म संचार हुआ।।
इसीलिए शुभ शांतिधारा, भक्त भाव से करते हैं।
अखंड पद हित गंधोदक पा, सर्व दुखों को हरते हैं।।8।।
अहो भाग्य है मेरा प्रभुवर, दर्श करूँ दो नयनों से।
शांति जिनेश्वर का गुण गाऊँ, तन से मन से वचनों से।।
भव सुख की कुछ चाह नहीं है वीतराग से क्या माँगू।
पूजन कर मैं शुद्ध भाव से, प्रभु से प्रभु पद ही चाहूँ।।9।।
शांतिनाथ स्वामी जगदीश्वर, दयासिंधु ऐसा वर दो।
अनुकूल प्रतिकूल योग में, समता हो ऐसा कर दो।।
शांतिनाथ के चरण पखारूँ, मिथ्या तिमिर विनाश करूँ।
तीर्थंकर पद वंदन करके, पंच पाप मल नाश करूँ।।10।।
शांतिप्रभु का दर्शन करके, सम्यग्दर्शन प्राप्त करूँ।
शांतिविधाता का सुमिरन कर, सम्यग्ज्ञान प्रकाश वरूँ।।
शांतिनाथ मूरत अर्चन कर, सम्यग्चारित हृदय धरूँ।
विघ्न विनाशक चरण चित्तधर,बारम्बार प्रणाम करूँ।।11।।
पावन रत्नत्रय धारण कर, पंच परम पद ध्यान करूँ ।
चउ आराधन द्वादश भावन, सोलह कारण चित्त धरूँ।।
प्रातिहार्य वसु गुण मंडित हो, सिद्धक्षेत्र को गमन करूँ।
ऋद्धि सिद्धिधर शांतिप्रभु की, पूजन कर भव भ्रमण हरूँ।।12।।

-:: दोहा ::-

शांतिप्रभु की भक्ति ही, मम जीवन आधार।
युगों-युगों तक मैं नहीं, भूलूँगा उपकार।। 13।।

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसंपन्न सर्वविघ्नविनाशक आत्मशांतिदायक अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त षोडशतीर्थंकर श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

-:: घत्ता ::-

श्री शांति जिनेश्वर, हे अखिलेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण ' करो।।

।। इत्याशीर्वाद : ।।

पूज्यपाद आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज की पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

संत शिरोमणि विद्यासागर, गुरुवर को करता वंदन।
रत्नत्रय के पालनहारे, महावीर के लघु नंदन।।
शरद पूर्णिमा के चंदा मम, ध्यान गगन में आ जाना।
कर्म कालिमा रज धो करके, शुद्धातम प्रगटा देना।।1।।

पूजन करने आया गुरुवर, भक्ति का लेकर आधार।
यही अरज है चारों गति के, दुख से मेरा हो उद्धार।।
आह्वानन करता हूँ स्वामी, स्थापन करूँ हृदय में आज।
आन विराजो हृदय वेदी पर, वास करो मेरे ऋषिराज।।2।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

युगों-युगों से जनम मरण की, ज्वाला में जलता आया।
सिंधु नीर से बुझी न ज्वाला, अतः भक्ति का जल लाया।।
श्री विद्यासागर गुरुदेवा, तव पूजन कर हर्षाया।
तुम जैसी शांति पाने मैं, शरण तिहारी हूँ आया।।1।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

परभावों के महाताप में, झुलस गया अति दुख पाया।
तुम सम शीतल समता पाने, चंदन सा बनने आया।।श्री ...।।2।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं.....।

क्षणभंगुर इंद्रिय सुख में ही, जीवन व्यर्थ गंवाया है।
अक्षय पद के लिये चरण में, अक्षत पुंज चढ़ाया है ।।श्री...।।3।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

कामदेव ने बाण चलाया, गुरु कृपा से बच पाया।
महाशील शीलेश्वर बनने, आप चरण में हूँ आया।।
श्री विद्यासागर गुरुदेवा, तव पूजन कर हर्षाया।
तुम जैसी शांति पाने मैं, शरण तिहारी हूँ आया।।4।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

महा भयानक क्षुधा रोग ने, काल अनादि तड़फाया।
कुशल वैद्य गुरु के चरणों में, औषध पाने हूँआया।।श्री ...।।5।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

एक तुम्हीं आधार हो स्वामी, मोह महातम नाश करो।
दूर करो अज्ञान हमारे, मन मंदिर में वास करो ।। श्री ...।।6।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ....।

ध्यान अग्नि में धूप डालकर,अष्ट कर्म का नाश करूँ।
शुक्ल ध्यान की प्राप्ति हेतु मैं,गुरु चरणों में वास करूँ।।श्री...।।7।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

कर्म फलों से पीड़ित होकर, मुक्ति फल पाने आया।
सिद्ध स्व पद पाने यतिवर मैं, पाऊँ गुरु कृपा छाया।।श्री...।।8।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

उपकारी पद आचारज का, अर्घ्य बना क्या चरण धरूँ।
भाव सहित स्वयमेव चरण में, मन वच तन से नमन करूँ।।
श्री विद्यासागर गुरुदेवा, तव पूजन कर हर्षाया।
तुम जैसी शांति पाने मैं, शरण तिहारी हूँ आया।।9।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

जयमाला

-: दोहा :-

गुरुवर हैं चिंतामणि, चिच्चेतन भगवान।
जयमाला चरणन धरूँ, शत-शत करूँ प्रणाम।।1।।

(चौपाई)

जयवंतों गुरूदेव हमारे, हैं अनंत उपकार तुम्हारे।
जिन शासन के आप सितारे, जग में रहते जग से न्यारे।।2।।

ग्राम सदलगा जन्म लिया है, माँ श्री मति को धन्य किया है।
विद्यासागर नाम तिहारा, बाल वृद्ध को लगता प्यारा।।3।।

तप्त स्वर्ण सम तन है न्यारा, दर्शन से मिटता संसारा।
सन् अड़सठ में दीक्षा पाई, सब परिवार बना शिव राही।।4।।

धन्य हुई अजमेर नगरियाँ, खिली त्याग संयम की कलियाँ।
छत्तीस घंटे ध्यान किये हैं, निज आतम रसपान किये हैं।।5।।

समयसार मय जीवन सारा, सांकेतिक मृदुवाणी धारा।
दृढ़ता से संयम को पाले, जिन आगम के हैं रखवाले।।6।।

परमेष्ठी आचार्य कहाते, ज्ञान सरोवर मुक्ता पाते।
दीक्षा के आधार हमारे, ज्ञान के पारावार सहारे।।7।।

तीन गुप्ति द्वादश तप धारे, क्षमा आदि दश धर्म संवारे।
पंचाचार आचरण पाले, षट् आवश्यक पालनहारे।।8।।

हैं छत्तीस गुणों के धारी, सारा जग पद में बलिहारी।
पद से अति निस्पृह रहते हैं, जो करते हैं वह कहते हैं।।9।।

गुरू कृपा के पंख जो पाते, साधक ध्यान गगन में जाते।
गुरुवर ही तकदीर संवारे, हारे को बन जाय सहारे।।10।।

घर-घर गुरु ने व्रती बनाये, ज्ञान सिंधु का पथ दिखलाये।
गुरुवर हैं सबसे निर्मोही, नहीं आप सम साधक कोई।।11।।

शांत क्षेत्र में तुम रहते हो, निज आतम अनुभव करते हो।
गुरु के सन्मुख सूरज फीका, लगता है चंदा भी नीचा।।12।।

गुरू शरण में जो भी आता, उसको ना दुर्भाग्य सताता।
पंचम गति के आप सहारे, पंच परावर्तन से तारे।।13।।

दुर्लभ वस्तु सुलभ हो जाती, गुरू कृपा जब रंग दिखाती।
हम धरते हैं ध्यान तिहारा, जानो सब मंतव्य हमारा।।14।।

स्वर्ग सुखों की चाह नहीं है, भव दुख की परवाह नहीं है।
मात्र मुक्ति का दर्शन चाहूँ, भव वन में फिर कभी न आऊँ।।15।।
सारे वन की कलम बना दूँ, कागज सारी धरा बना दूँ।
सर्व समन्दर स्याही घोलूँ, 'पूर्ण' गुणों को कैसे बोलूँ।।16।।

-:: दोहा ::-

गुरुवर की महिमा अगम, सुर गुरु लहे न पार।
अल्पमति कैसे कहें, करो गुरू उद्धार।। 17।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्रीविद्यासागरमुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

-:: घत्ता ::-

जय-जय श्री गुरुवर, ज्ञान सरोवर, शिव सुख का भंडार भरें।
यह पुष्प समर्पण, जीवन अर्पण, 'विद्यासागर पूर्ण' करें।।

।। इत्याशीर्वादः।।

अर्घ्यावली

देवशास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर एवं सिद्ध प्रभु

ज्ञानोदय छंद

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं स्वामी।
दर्शन ज्ञान चरित गुण आदि, निज में प्रगट करूँ स्वामी।।
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री, बीस तीर्थंकर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अनर्घ्य पद को प्राप्त करूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनंतानंतसद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आदिनाथ भगवान

ज्ञानोदय छंद

मेरे पास नहीं कुछ स्वामी, कैसे अर्घ्य बनाऊँगा।
आतम धन से निर्धन हूँ मैं, अब तुम सम बन जाऊँगा।।
आदीश्वर जिनराज आज यदि, अपना भक्त बनाओगे।
सच कहता हूँ शीघ्र मुझे भी, सिद्धालय में पाओगे।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

चन्द्रप्रभ भगवान

त्रिभंगी छंद

हम दास तिहारे, आये द्वारे, सिद्धक्षेत्र में बस जायें।
पद अर्घ्य चढ़ाये, शरणे आये, चन्द्रप्रभ सम बन जायें।।
अष्टम तीर्थंकर, घातिक्षयंकर, भव्य हितंकर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, जिन गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

नेमिनाथ भगवान

नरेन्द्र छंद

कर्म शक्ति को क्षय करने प्रभु, चरणन अर्घ्य चढ़ाया।
ध्रुव अनर्घ पद पाने का अब, अपूर्व अवसर आया।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
एक अकेला भटक रहा हूँ, शिवपथ मुझे दिखाना।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

पार्श्वनाथ भगवान

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव खो चुका हूँ, क्या चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।
प्रभु आपका ही हो चुका हूँ, आ गया हूँ शर्ण में।।
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको, लीजिए अपनाइये।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिये।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

महावीर भगवान

(तर्ज - माता तू दया करके ...)

पर को देखा मैंने, निज को ही ना परखा।
अब सुख अनंत पाने, संबंध तजूँ पर का।।
ज्ञायक पद पा जाऊँ, हो शक्ति प्रगट स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

सोलह कारण

नरेन्द्र छंद

जग के सारे नश्वर पद तज, नाथ शरण में आया।
सिद्धों के वसु गुण पाने यह, अर्घ्य बनाकर लाया।।
सोलह कारण शुद्ध भावना, श्रद्धा युत जो भावे।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, तीर्थंकर पद पावे।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

चौबीसी भगवान

ज्ञानोदय छंद

जड़ द्रव्यों का मूल्य किया पर, आत्म द्रव्य अनमोल रहा।
फिर भी निज को जड़ द्रव्यों से, मैं मूरख क्यों तोल रहा।।
शिवपथ की आशा ले आया, अर्घ्य चढ़ा करता वंदन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बंधन।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

निर्वाण क्षेत्र

(ज्ञानोदय छंद)

श्री कैलाशगिरि चंपापुरी, गिरनारी सम्मेदशिखर।
पावापुर निर्वाण भूमि को,नमन करूँ मन-वच-तन कर।।
श्री निर्वाण भूमि का कण-कण, देव मनुज से पूजित है।
पुण्य धरा को अर्घ्य चढ़ाऊँ,जो ऋषि-मुनि से वंदित है।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

जिनवाणी

(चौबोला छंद)

अष्ट द्रव्य का थाल सजाया, आत्म द्रव्य को भूल गया।
भाव भक्ति से अर्घ्य बना अब, जिन वचनों को नमन किया।।
आप्त कथित गूँथी गणधर मुनि, महारचित है जिनवाणी।
स्व-पर तत्त्व का भेद कराती, दिव्यध्वनि है कल्याणी।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूत-स्याद्वादमयीगर्भित-सरस्वतीद्वादशांग-श्रुतज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों ।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।
अरहंत भाषित वैन पूजूँ, द्वादशाङ्ग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिवहेत सब आशा हनी ।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम, अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु - नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ।।
कैलास श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिवगेह के।।

-:: दोहा ::-

जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विध भक्ति बढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं भावपूजा - भाववंदना - त्रिकालपूजा - त्रिकालवंदना - कृत - कारितमोदनैः सहितं श्रीअरिहन्त - सिद्ध - आचार्य - उपाध्याय - सर्वसाधु - पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग - करणानुयोग - चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन - विशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि - दशलक्षण - धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल - थल - आकाश - गुहा - पर्वत - नगरवर्ति - ऊर्ध्व - मध्य- अधोलोकेषु विराजमान - कृत्रिम - अकृत्रिम - जिन - चैत्यालय - जिनबिम्बेभ्यो नमः । विदेहक्षेत्रे विद्यमान - विंशति - तीर्थङ्करेभ्यो नमः। पञ्च - भरत -पञ्च - ऐरावत -दशक्षेत्र -सम्बन्धि - त्रिंशत् - चतुर्विंशतिगत - विंशति - उत्तर - सप्तशत - जिनबिम्बेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप - सम्बन्धि - द्वापञ्चाशत् - जिन - चैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि - अशीति - जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर - कैलाश - चम्पापुर - पावापुर - गिरनार - सोनागिरि - राजगृही - मथुरा - शत्रुञ्जय - तारङ्गा - कुण्डलपुर आदि - सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-

मूढ़बद्री - हस्तिनापुर - चन्देरी - पपौरा-अयोध्या- चमत्कारजी - महावीरजी - पदमपुरी - तिजारा -आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्रीवृषभादि - महावीरपर्यन्त - चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ....नाम्नि नगरे ....मासानामुत्तमे ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....मुन्यार्यिका - श्रावक - श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं।।
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थङ्कर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शान्तिहित शान्ति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौ शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको। पढ़ैं तिन्हें पुनि चार सङ्घ को।।

पूजैं जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।।
संपूजकों को प्रतिपालकों को,
यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,
कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे।।

होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म - धारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा।।
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को, जो सदा सौख्यकारी।।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का ।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ।।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहौं प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने।
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भव दुख से।
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ तव चरण - शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(कायोत्सर्ग - नौ बार णमोकार मन्त्र)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय।।

पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।

मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।

चौबीसों जिनराज पद, पूजें भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण।।

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप)

शांति विधान की कथा

शांति विधान कब क्यों और किसने किया? इस शांति विधान को करने से क्या फल प्राप्त हुआ । इसकी कथा का प्रसंग इस प्रकार है-

एक बार मथुरा नगर में सूर्यवंशी अन्यायी राजा हुआ इसके अन्याय से प्रजा भी न्याय व कर्तव्य विहीन हो गई तब ग्राम देवता ने क्रोधित होकर राजा सहित सारी प्रजा पर उपसर्ग करना प्रारम्भ कर दिया और अनेकों रोगों से पीड़ित कर दिया । फलस्वरूप प्रतिदिन लोग मरने लगे । ऐसी दशा देख राजा सहित प्रजा ने मथुरा नगरी को छोड़ दिया । सारा नगर जन शून्य हो गया । तभी संयोग से एक दिन आषाढ़ सुदी तेरस को मथुरा नगर की स्थिति से अनजान सुमति नाम का एक श्रेष्ठी आया । जन शून्य नगरी को देख विस्मित हुआ, किन्तु तेज वर्षा के कारण एक शून्य घर में ठहर गया । अचानक उपद्रव होने से दुःखी मन से वह राजा के समीप पहुँचा और जनशून्य नगरी का कारण जानकर जिनालय में जाकर भगवान की आराधना करने लगा । इतने में ही पुण्य संयोग से उसे दो चारण ऋद्धिधारी मुनियों के दर्शन हुए। श्रद्धा से उन्हें नमन कर विनय भाव से पूछा कि हे ऋषिराज ! मथुरा नगरी का यह उपद्रव कैसे शांत हो सकता है ? हे दया सिंधु कृपा कर बतलाइये । विनयवान श्रेष्ठी के वचन सुन मुनिराज बोले - हे भव्य ! श्रद्धा भाव से शांति विधाता श्री शांतिनाथ भगवान का पूजा विधान करो । इससे सर्व उपद्रव शांत होगा। इतना कहकर दोनों चारण ऋद्धिधारी मुनी वहाँ से विहार कर गए और इधर सुमति नाम के श्रेष्ठी ने भाव सहित शांतिविधान किया फलस्वरूप मथुरा नगरी में नगर देवता कृत उपसर्ग पूर्ण शांत हो गया, नगरवासियों ने अपने-अपने गृह में प्रवेश किया, फिर जिनालय में जाकर शांतिनाथ भगवान के प्रति विशेष भक्ति भाव से पूजा विधान किया और परस्पर प्रेमभाव से रहने लगे।

इस विधान का श्रेष्ठ समय जब सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष हो, तब शुक्ल पक्ष की एकम् से लगाकर पूर्णिमा तक भावों से यह विधान विधिपूर्वक करें। यह विधान सर्व विघ्न का नाश करने वाला, आत्म शांति का दाता और भव्य जीवों को मुक्ति प्रदाता हैं।

जैनं जयतु शासनम् । वंदे विद्यासागरम् ।।

"आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की अमृतवाणी"

-: भक्ति स्तुति :-

- पंच परमेष्ठी की भक्ति एवं ध्यान से विशुद्धि बढ़ेगी, संक्लेश घटेगा, वात्सल्य बढ़ेगा।

-: भक्ति महिमा :-

- भक्ति गंगा की लहर हृदय के भीतर से प्रवाहित होना चाहिए और पहुँचना चाहिए वहाँ जहाँ निस्सीमता हो।

-: मौन :-

- जो व्यक्ति वाणी को नियन्त्रित नहीं कर सकता है वह साधना नहीं कर सकता है।
- वे महान हैं जो मुख से एक शब्द निकालने में आगे पीछे विचार करते हैं।

-: साधना :-

- सबसे बड़ा साधक वही है जिसकी साधना गुरु आज्ञा से परोक्ष में भी निर्दोष और उत्साह सहित होती है।
- साधनामय जीवन बार बार नहीं मिलता उन्नति के लिए यह एक स्वर्णिम अवसर है, जो इसके मूल्य को समझता है वह कितनी ही बाधाएं, उपसर्ग, परिषह क्यों न आए उन्हें सहर्ष स्वीकार कर अपने साधना पथ पर आगे बढ़ता है।

-: कर्त्तव्य बोध :-

- ऐश आराम की जिन्दगी विकास के लिये नहीं वरन् विनाश के लिए कारण है, या यूँ कहो कि ज्ञान का विकास रोकने में कारण है।
- जब हवा काम नहीं करती तब दवा काम कर जाती है। और जब दवा काम नहीं करती तब दुआ काम कर जाती है।
- सफलता उसके चरण चूमती है जो निरन्तर परिश्रम करता है। हे मानी प्राणी ! देख तो इस पानी को और हो जा पानी-पानी।

श्री शांतिनाथ विधान

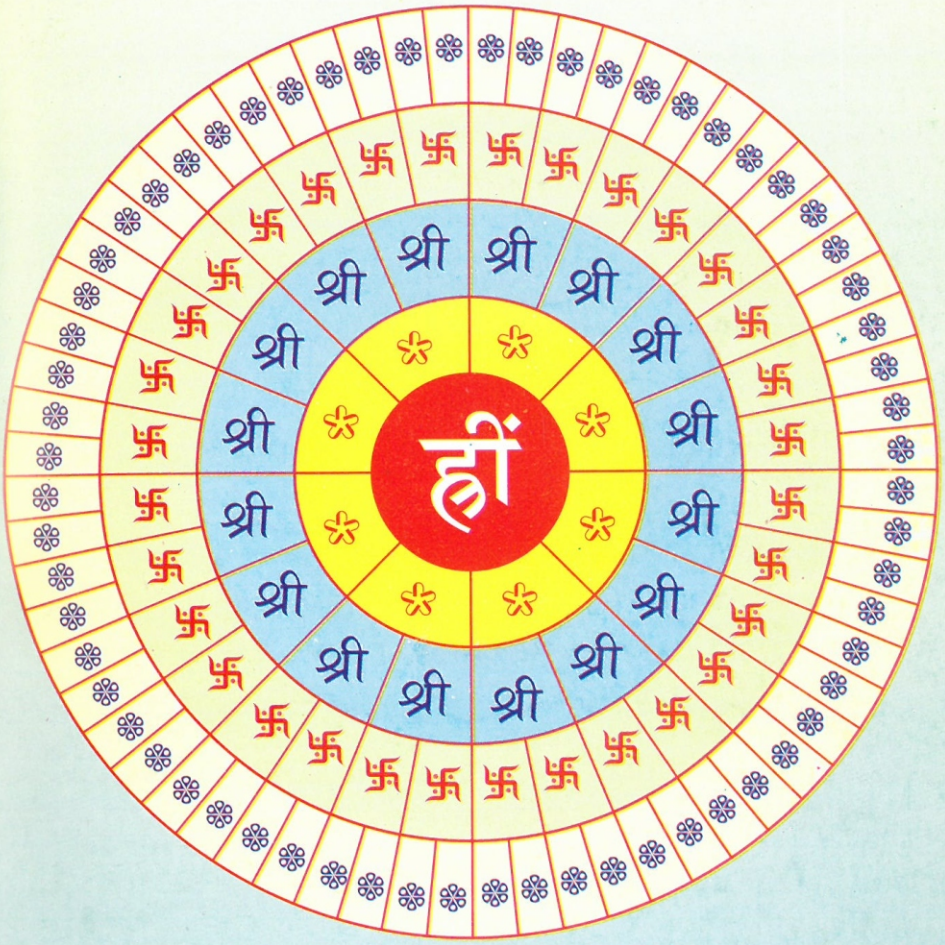

मेरे आतम के प्रदेश पर,
छवि आपकी ही अंकित है।
स्वासों की साजों पर हरदम
गीत आपके ही गुंजित है।।

Since 1973

Computer Re-Setting by :

Jeetendra Patni

M. 98290 71922

04.04.2020